कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. M2250 विषय वैदिक

नाव श्रीशुक्लयजुर्वेदस्य ब्रह्मभाष्यसमुद्रित।

लेखक / लिपीकार आशिक

पृष्ठ 32 काळ जाने०.1886 पूर्ण / ~~अपूर्ण~~

श्रीशुक्लयजुर्वेदस्य

ब्रह्मभाष्यम्

श्रीभार्गव ज्वालाप्रसाद शर्म्मणा निर्म्मितम्। शतपथ सायन महीधरादि भाष्यप्रमाणैः संयुक्तम् संस्कृतार्यभाषाभ्यां समन्वितम्

द्वितीय वर्ष का	अंक ८
पौष	सम्वत १९४२
जनवरी	सन् १८८६ ई०

हरिश्चन्द सम्वत १

आगरा

सत्यप्रकाश यंत्रालय मुहल्ला कचहरी घाट में श्रीमद्वैदिक सद्धर्म सभा के सभासदों की सम्मति से मुद्रित हुआ

वार्षिक मूल्य

अग्रिम नौछावर महसूल सहित			पाश्चात महसूल सहित		
संस्कृत भाष्य	भाषाभाष्य	दोनों	संस्कृत	भाषा	दोनों
३।=)	३।=)	६।=)	५।=)	५।=)	१०।=)

अस्य ग्रन्थस्याधिकारः श्रीमत्सद्धर्माख्य सभया सर्वथा स्वाधीन एव रक्षितः

यह ग्रन्थ सन् १८६७ ई० के २५ वें ऐक्ट के १८ व १९ दफ़ा के अनुसार रजिस्टर किया गया॥

M 8850

वैदिक सभा के नियम

(१) वेद भाष्य का मूल्य अग्रिम ही नियत था परन्तु बहुधा महाशय अग्रिम मूल्य नहीं देते अतएव पश्चात् देने का नियम भी नियत किया जाता है जिन महाशयों ने अभी तक मूल्य नहीं भेजा है अब कृपा कर भेजदें इस अंक के पहुंचने पर भी यदि रुपया न भेजेंगे तो पश्चात् नियम के अनुसार उनसे मूल्य लिया जावेगा॥

(२) जो महाशय नवीन ग्राहक हों उनको योग्य है कि यदि वे संस्कृत और भाषा दोनों प्रकार का भाष्य लिया चाहें तो १२।।।=) और जो केवल भाषा अथवा केवल संस्कृत लेना अभीष्ट हो तो ६।) दो वर्ष का मूल्य महसूल सहित मनि आर्डर के द्वारा भेजदें अथवा वेल्यू पेबिल मंगालें अन्यथा अंक नहीं भेजें जावेंगे॥

(३) जो महाशय वैदिक सभा के सभासद अथवा सहायक हैं उनकी आज्ञा पर तुरन्त अंक भेजदिये जावेंगे—परन्तु उनको अनुग्रह पूर्वक ग्राहकों का रुपया वसूल करके भेजना होगा॥

(४) जो महाशय दश ग्राहक उद्यत करके सभा की सहायता करेंगे उनको एक प्रति बिना मूल्य दी जायगी॥

आर्यत्व प्रकाश

इस नाम की एक पुस्तक श्री मुन्शी इन्द्रमणि मुरादाबादी विरचित इस यंत्रालय में छपाई है इसमें आर्य लोगों के कर्त्तव्यों की सविस्तर व्यवस्था लिखी है और बहुधा सत शास्त्रों के प्रमाण भी दिये हैं और दयानंद जी की किसी२ कल्पना का खंडन भी किया है यह पुस्तक भाषा और उर्दू में है ८२ पृष्ठ देखने योग्य हैं और मूल्य डाक महसूल सहित ।) है जिन को अपेक्षित हो सुदर्शन प्रेस मुरादाबाद को पत्र भेज कर मंगालें॥

स्वरोदयसार

इस नाम का छोटा सा ग्रंथ जिसमें स्वरोदय के मत से सब प्रकार के प्रश्नों का उत्तर सुगमता से ज्ञात होता है श्री पं॰ केदारनाथ मिश्र सब ओवरसियर मिले टरी वर्क लखनऊ का रचा हुआ इस यंत्रालय में बिक्री के अर्थ प्रस्तुत है मूल्य केवल ७॥ और महसूल ७॥ है परन्तु १० पुस्तक पर भी ७॥ महसूल लगता है अतएव जो महाशय इस उपयोगी पुस्तक को मंगाना चाहैं तो इकट्ठी पुस्तकों में महसूल की बचत हो सक्ती है।

वैष्णव सत्सभा जगाधरी का मासिक पत्र

इस नाम का एक मासिक पत्र वैष्णव सभा जगाधरी से उर्दू भाषा में प्रकाशित होता है इसमें सत सनातन धर्म सम्बंधी विषय उत्तम रीति से लिखे जाते हैं और नवीन कल्पित मतों के उच्छेद में सत शास्त्र के प्रमाण दिये जाते हैं इस का मूल्य कुछ नियत नहीं

श्रीगणेशायनमोनमः

हुडी

आगरासत्यप्रकाशयंत्रालयमेंभार्गवज्वालाप्रसाद शर्म्मा केप्रवन्धसे छापी गई॥

सम्वत१९४३

पन्द्रहवीं अध्याय में चयन के मंत्रों को समाप्त कर सोलहवीं अध्याय में शतरुद्रीय नाम होम के मंत्रों को कहते हैं॥

हरिः ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥

रुद्र। ते। मन्यवे। नमः। उतो। ते। इषवे। नमः। उत। ते। बाहुभ्याम्॥ नमः॥ १॥

उत्तर मुख होकर होम करता है उसका मंत्र-

ॐ नमस्त इत्यस्य (परमेष्ठी ऋषिः- गायत्री छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः– भृकुटि कमल में प्राप्त योगी महेश्वर की स्तुति करता है १ हे बुद्धि, धीरज, पुष्टि, भक्ति, और स्नान के दाता, हे संसार रोग के दूर करने वाले अथवा हे पापियों को पाप फल के देने से रुलाने वाले २ आपके ३ क्रोध के लिये ४ नमस्कार ५ और ६ आपके ७ वाण के लिये ८ नमस्कार ९ और १० आपकी ११ भुजाओं के लिये १२ नमस्कार यहां पर श्रुति का प्रमाण है, कि यज्ञ में नमस्ते कहना चाहिये यज्ञ के सिवाय दूसरी जगह नमस्ते कहना अनुचित है॥ १॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥

गिरिशन्त। रुद्र। या। ते। शिवा। अघोरा। अपापकाशिनी। तनूः। तया। शन्तमया। तन्वा। नः। अभिचाकशीहि॥ २॥

ॐ यात इत्यस्य (परमेष्ठी ऋषिः- आर्षी स्वराडनुष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ हे वेद वाणी में स्थित होकर कल्याण वा मोक्ष को देने वाले अथवा मेघ में स्थित हो कर वर्षा से सुख देने वाले २ रुद्र ३ जो ४ आप की ५ शांत मंगल रूप ६ सौम्य ७ पुण्य फल की दाता ८ जगत का विस्तार करने वाली पराशक्ति है ९ उस १० परमानंद रूप ११ देहाकार शक्ति से १२ हमको १३ देखो॥ २

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः पुरुषं जगत्॥ ३॥

गिरिशन्त। गिरित्र। याम्। इषुम्। अस्तवे। हस्ते। बिभर्षि। ताम्। शिवाम्। कुरु। पुरुषम्। जगत्। मा। हिंसीः॥ ३॥

ओं यामिषुमित्यस्य (परमेष्ठी ऋषिः- विराडार्ष्यनुष्टुप् छं० रुद्रो देवता) १

पदार्थः - १ हे वेद वाणी में स्थित होकर कल्याण करने वाले २ और हे वेद वाणी में स्थित रक्षा करने वाले तुम ३ जिस ४ वेदार्थ रूप बाण को ५ फेंकने के लिये ६ हाथ में ७ धारण करते हो ८ उस बाण को ९ कल्याण करने वाला १० करो ११ जीवात्मा १२ और इन्द्रिय समूह को १३, १४ संसार बंधन से मत नाशकरो अर्थात् सत्यार्थ का उपदेश करके मोक्ष को प्राप्त कराओ॥ ३॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मं सुमना असत्॥ ४॥

गिरिश। शिवेन। वचसा। त्वा। अच्छ। वदामसि। नः। सर्वम्। इत्। जगत्। यथा। अयक्ष्मं। सुमनाः। असत्॥ ४॥

ओं शिवेनेत्यस्य (परमेष्ठी ऋषिः- निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः - १ हे वेद वचन में शयन करने वाले परमेश्वर हम २ वेद रूप ३ स्तोत्र से ४ तुम को ५ सन्मुख होकर ६ प्रार्थना करते हैं ७ हमारे ८, ९ सब ही १० मनुष्य पशु आदि वा इन्द्रियां ११ जिस प्रकार १२ रोग रहित वा संसार रोग से मुक्त १३ और शुभ मन वाली १४ होवें॥ ४॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव॥ ५॥

अधिवक्ता। प्रथमः। दैव्यः। भिषक्। अध्यवोचत्। च। सर्वान्

[८]अहीन्। [९]जम्भयन्। [१०]सर्वाः। [११]अधराञ्चीः। [१२]यातुधान्यः। [१३]च। [१४]परासुव ५

ओं अध्यवोचदित्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः-भुरिगार्षी बृहती छंदः-रुद्रो देवता) १

पदार्थः- १ तारक मंत्र का उपदेश करने वाला २ ईश्वर ३ विद्वानों का हितकारी। ४ संसार रोग का नाशक रुद्र ५ हम को महा वाक् का उपदेश करो ६ और ७ सब ८ सर्प की समान डसने वाले काम आदि को ९ नाश करता १० सब ११ अधोगमन शील १२ काम कला रूप राक्षिसियों को १३ भी १४ हम से दूर करो ॥५॥

असौ यस्ताम्रोऽअरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनꣳ रुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳ हेडऽईमहे

[१]च। [२]यः। असौ। ताम्रः। अरुणः। उत। बभ्रुः। सुमङ्गलः। च। ये। [११]सहस्रशः। [१२]रुद्राः। [१३]एनम्। [१४]अभितः। [१५]दिक्षु। [१६]श्रिताः। [१७]एषाम्। [१८]हेडः। [१९]ईमहे ॥ ६॥ छठवां मंत्र

ओं असावित्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः- निचृदार्षी पंक्तिश्छंदः- रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ और २ जो ३ यह ४ उदय समय अत्यन्त लाल वर्ण ५ अस्त समय रक्त वर्ण ६ और ७ दूसरे समय पिंगल वर्ण ८ मंगल कर्मों का विस्तार करने वाला सूर्य रूप रुद्र है ९ और १० जो ११ असंख्य १२ रुद्रांश रूप देवता १३ इसके १४ सब ओर १५ पूर्व आदि दिशाओं में १६ स्थित हैं १७ उन्हों के १८ क्रोध को जो कि हमारे अपराध से प्रकट हुआ हम ही १९ निवारण करते हैं अर्थात् सर्वस्व के अर्पण से दूर करते हैं॥ ६॥

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा ऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः॥ ७॥

[१]यः। [२]असौ। [३]नीलग्रीवः। उत। [५]विलोहितः। [६]अवसर्पति। [७]एनम्। [८]गोपाः। अदृश्रन्। उदहार्यः। अदृश्रन्। [१२]सः। [१३]दृष्टः। [१४]नः। [१५]मृडयाति ७

सातवां मंत्र

ओं असौ य इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः विराडार्षीपंक्तिश्छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ जो २ यह ३ विषधारण से अस्त समय नील कंठ ४ और ५ विशेष रक्त समष्टि व्यष्टि सूर्य रूप रुद्र ६ उदय अस्त करता निरंतर चलता है ७ उसको ८ इन्द्रिय गोलकों की रक्षक इन्द्रिय शक्तियां ९ देखती हैं १० और अमृत को प्राप्त कराने वाली प्रजा शक्तियां ११ देखती हैं १२ वह रुद्र १३ दर्शन देता हुआ १४ हम को १५ मोक्ष स्वर्ग का दाता हो ॥ ७॥

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो
ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः ॥ ८॥

नीलग्रीवाय। सहस्राक्षाय। मीढुषे। नमः। अस्तु। अथो। अस्य। ये। सत्वानः। तेभ्यः। अहम्। नमः। अकरम् ॥ ८॥

आठवां मंत्र

ओं असौ य इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः विराडार्षीपंक्तिश्छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ नील कंठ २ इन्द्र स्वरूप अथवा विराट् रूप ३ वृष्टि कर्ता पर्जन्य रूप वा वरुण रूप रुद्र के लिये ४ नमस्कार ५ हो ६ और ७ इस रुद्र के ८ जो ९ भक्त देवता हैं १० उनके लिये ११ मैं १२ नमस्कार १३ करता हूं ॥ ८॥

प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च
ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप। ९।

भगवः। धन्वनः। उभयोः। आर्त्न्योः। ज्याम्। त्वम्। प्रमुञ्च। याः। नौ। हस्ते। इषवः। ताः। परावप ॥ ९॥ आठवां मंत्र

ओं प्रमुञ्चेत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः भुरिगार्ष्युष्णिक्छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ हे ऐश्वर्य से युक्त २ धनुष की ३ दोनों ४ कोटि में स्थित ५ ज्या को ६ तुम ७ दूर करो ८ और ९ जो १० आपके ११ हाथ में १२ वाण हैं १३

उनको पटकदो जिस कारण में योग द्वारा जीवन मुक्त कियागया ना कि वध के योग्य॥ ९॥

विज्यन्धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो वाणवा२॥ उत। अनेशन्नस्य याइषव आभुरस्य निषङ्गधिः १०

कपर्द्दिनः। धनुः। विज्यं। उत। वाणवान्। विशल्यः। अस्य। याः। इषवः। अनेशन्। अस्य। निषङ्गधिः। आभुः॥ १०॥

ओं विज्यन्धनुरित्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः भुरिगार्ष्यनुष्टुप् छं० रुद्रो देवता) दशवां मंत्र १

पदार्थः १ जटाजूटधारी रुद्र का २ धनुष ३ ज्यारहित ४ और ५ तरकस ६ भाल रखने वाले वाणों से रीता हो ७ इस ईश्वर के ८ जो ९ वाण हैं वे १० अदर्शन को पाओ ११ इस ईश्वर का १२ खड्ग कोष १३ खड्ग रहित हो जिस कारण योग से जीवन मुक्त कियागया इन वध के योग्य॥ १०॥

यातेहेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ११

मीढुष्टम। ते। या। हेतिः। ते। हस्ते। धनुः। बभूव। तया। अयक्ष्मया। त्वम्। विश्वतः। अस्मान्। परिभुज। ११। ग्यारहवां मंत्र

ओं यात इत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः निचृदनुष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ हे ज्ञान अमृत से सींचने वाले २ आपका ३ जो ४ ज्ञान रूप वज्र है तथा ५ आपके ६ हाथ में ७ माया रूप धनुष ८ है ९ उस १० संसार रोग रहित शक्ति से युक्त ११ तुम १२ सब ओर १३ हम भक्तों को १४ संसार बंधन से रक्षा करो॥ ११॥

परिते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथोय इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम् १२

ते। धन्वनः। हेतिः। विश्वतः। अस्मान्। परि वृणक्तु। अथो।

यः। तव। इषुधिः। नम। अस्मत्। आरे। निधेहि। १४। वारहवां मंत्र।
ओं परीत्यस्य (प्रजापति ऋषिः निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः हे रुद्र १ आपका २ धनुष सम्बंधी ३ आयुध ४ सब ओर ५ हम को ६ त्यागो अर्थात् मत मारो ७ और ८ जो ९ आपका १० तरकस है ११ उसको १२ हमसे १३ दूर १४ स्थापन करो जिस कारण योग से जीवन मुक्त किया हूं न वध के योग्य ॥ १२॥

अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव १३

सहस्राक्ष। शतेषुधे। त्वम्। धनुः। अवतत्य। शल्यानाम्। मुखा। निशीर्य। नः। शिवः। सुमनाः। भव। १३। तेरहवां मंत्र।
ओं अवतत्येत्यस्य (प्रजापतिऋषिः निचृदार्ष्यनुष्टुप् छं० रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ हे विराट् रूप २ अनंत नरक से वाले ३ तुम ४ धनुष को ५ ज्यारहित करके ६,७ और वाणों की भालों को ८ दूर करके ९ हम पर १० शांत ११ और शुभचिन्ह वाले १२ हूजिये जिस कारण मैं सायुज्य के योग्य हूं न वध के योग्य ॥ १३॥ **नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने १४**

ते। अनातताय। आयुधाय। नमः। ते। उभाभ्याम्। बाहुभ्याम्। उत। तव। धृष्णवे। धन्वने। नमः॥ १४॥ चौदहवां मंत्र।
ओं नमस्त इत्यस्य (प्रजापतिऋषिः भुरिगार्ष्युष्णिक् छं० रुद्रो देवता) १

पदार्थः हे ईश्वर १ आपके २ धनुष में न चढ़ाये हुए ३ वाण के लिये ४ नमस्कार ५ आपकी ६ दोनों ७ भुजा ८ और ९ आपके १० शत्रु मारने में प्रबल ११ धनुष के लिये भी १२ नमस्कार ॥ १४॥

मानो महान्तमुत मानो अर्भकम्मान उक्षन्त

मुतमार्भकमुक्षितम्। मानो वधीः पितरम्मोतमा तरम्मानः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः॥१५॥

रुद्र। नः। महान्तं। मा। वधीः। उत। नः। अर्भकं। मा। नः। उक्षन्तं। मा। उत। नः। उक्षितं। मा। नः। पितरं। मा। उत। नः। मातरं। मा। नः। प्रियाः। तन्वः। मा। रीरिषः॥१५॥ पन्द्रहवां मंत्र

ओं मानो महान्तमित्यस्य (कुत्सऋषिः निचृदार्षीजगतीछं० रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ हे रुद्र २ हमारे ३ अहंकार को ४,५ संसार बंधन से मत मारो ६ और ७ हमारे ८ मानस सूर्य को ९ संसार बंधन से छुटाओ १० हमारे ११ प्राण को १२ संसार बंधन से छुटाओ १३ और १४ हमारे १५ भूतात्मा को १६ संसार बंधन से छुटाओ १७ हमारे १८ मन को १९ संसार बंधन से छुटाओ २० और २१ हमारी २२ वाणी को २३ संसार बंधन से छुटाओ २४ हमारी २५ प्यारी २६ आत्मांशु रूप इन्द्रियों को २७,२८ संसार बंधन से छुटाओ॥ १५॥

मानस्तोके तनये मान आयुषि मानो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान्रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥१६॥

रुद्र। नः। तनये। तोके। मा। रीरिषः। नः। आयुषि। मा। नः। गोषु। मा। नः। अश्वेषु। नः। भामिनः। वीरान्। मा। वधीः। हविष्मन्तः। सदम्। इत्। त्वा। हवामहे॥१६॥ सोलहवां मंत्र

ओं मानस्तोक इत्यस्य (कुत्सऋषिः निचृदार्षी जगतीछन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः- १ हे रुद्र २ हमारे ३ योग यज्ञ का विस्तार करने वाले ४ प्राण पर ५,६ हिंसा मत करो अर्थात् उसको पुष्ट करो ७ हमारे ८ जीवन पर ९ हिंसा मत करो अर्थात् अल्प निवारण करो १० हमारी ११ इन्द्रियों पर १२ विजय कराओ १३ हमारे १४ मानस सूर्य पर कृपा करो १५ और हमारे १६ तेजस्वी १७

शमदम आदि वीरों को १८,१९ मत मारो जिस कारण २० हवि से युक्त हम २१ सदैव २२ तुम को २३ आव्हान करते हैं ॥१६॥

नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशाञ्च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतये नमो नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानाम्पतये नमः

हिरण्यबाहवे । नमः । सेनान्ये । नमः । च । दिशां । पतये । नमः । हरिकेशेभ्यः । वृक्षेभ्यः । नमः । पशूनां । पतये । नमः । त्विषीमते । शष्पिञ्जराय । नमः । पथीनां । पतये । नमः । उपवीतिने । हरिकेशाय । पुष्टानां । पतये । नमः ॥१७॥ सन्नद्धवांमंत्र ॐनमइत्यस्य (कुत्स ऋषिः - निचृदति धृतिश्छन्दः - रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ ज्योतिरूप भुज वाले के लिये २ नमस्कार ३ भक्तों के लिये ४ काम आदि सेना के घोर भक्तों के लिये शमदम आदि सेना के नायक के लिये ४ नमस्कार ५ और ६ दिशाओं के ७ स्वामी के लिये ८ नमस्कार ९ त्रिदेव रूप १० शरीर धारी के लिये ११ नमस्कार १२ सूर्य चन्द्र अग्नि प्राण इन्द्रिय आदि के १३ रक्षक के लिये १४ नमस्कार १५ दीप्तिमान १६ और देहाभिमानियों को जरा युक्त करने वाले के लिये १७ नमस्कार १८ देव पितर ब्रह्म सम्बंधी मार्गों के १९ स्वामी के लिये २० नमस्कार २१ यज्ञोपवीत धारी २२ त्रिदेव रूप के लिये नमस्कार २३ ब्रह्म भाव प्राप्त करने वाले पुरुषों के २४ स्वामी के लिये २५ नमस्कार ॥१७

नमो बभ्लुशाय व्याधिनेऽन्नानाम्पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगताम्पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानाम्पतये नमः १८

वभ्लुशाय। नमः। व्याधिने। नमः। अन्नानां। पतये। नमः। भुवस्य। हेत्यै। नमः। जगतां। पतये। नमः। आततायिने। रुद्राय नमः। क्षेत्राणां। पतये। नमः। अहन्त्ये। सूताय। नमः। वनानां पतये। नमः॥ १८॥ अठारहवां मंत्र

ॐनमइत्यस्य (कुत्सऋषिः- निचृदष्टिश्छन्दः- रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ विष्णु सूर्य भगवती गणेश और शिव नाम पंच देव रूप के लिये २ नमस्कार ३ शत्रुनाशक के लिये ४ नमस्कार ५,६ अन्न पालक के लिये ७ नमस्कार ८,९ संसार वंधननाशक के लिये १० नमस्कार ११,१२ जगत पालक के लिये १३ नमस्कार १४ शस्त्र उठाने वाले १५ रुद्र के लिये १६ नमस्कार १७,१८ देह पालक के लिये १९ नमस्कार २० रक्षक २१ और देह रथ के वाहक (चलाने वाले) अंतर्यामी के लिये २२ नमस्कार २३ वानप्रस्थ आश्रमों के २४ स्वामी के लिये २५ नमस्कार॥ १८॥

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणाम्पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो नम उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः॥ १९॥

रोहिताय। स्थपतये। नमः। वृक्षाणां। पतये। नमः। भुवन्तये। वारिवस्कृताय। नमः। ओषधीनां। पतये। नमः। मंत्रिणे। वाणिजाय। नमः। कक्षाणां। पतये। नमः। आक्रन्दयते। उच्चैर्घोषाय। नमः। पत्तीनां। पतये। नमः॥ १९॥ उन्नीसवां मंत्र

ॐनमइत्यस्य (कुत्सऋषिः- विराडतिधृतिश्छन्दः- रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ मत्स्यावतार रूप २ परमेश्वर के लिये ३ नमस्कार ४ ब्रह्मांड रूप वृक्षों के ५ स्वामी के लिये ६ नमस्कार ७ भूमंडल का विस्तार करने वाले ८

और जल वासी असुर को मारने वाले वाराह रूप के लिये ९ नमस्कार १० संसार रोग की ओषधों के ११ स्वामी को १२ नमस्कार १३ विचार में कुशल १४ दानमति ग्रह व्यापार के कर्त्ता वामन रूप के लिये १५ नमस्कार १६ संसार रोग की ओषधों के १७ स्वामी को १८ नमस्कार १९ असुरों के रुलाने वाले २० बड़ा शब्द करने वाले न्रसिंह रूप के लिये २१ नमस्कार २२ देव सेनाओं के २३ स्वामी स्कंद रूप को २४ नमस्कार॥ १९॥

नमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनाम्पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनीनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमः २०

१ कृत्स्नायतया। २ धावते। ३ नमः। ४ सत्वनां। ५ पतये। ६ नमः। ७ सहमानाय। ८ निव्याधिने। ९ नमः। १० आव्याधिनीनां। ११ पतये। १२ नमः। १३ निषङ्गिणे। १४ ककुभाय। १५ नमः। १६ स्तेनानां। १७ पतये। १८ नमः। १९ निचेरवे। २० परिचराय। २१ नमः। २२ अरण्यानां। २३ पतये। २४ नमः॥ २०॥

ओंनम इत्यस्य (कुत्स ऋषिः- अति धृतिश्छन्दः- रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ कान तक धनुष को खेंच कर २ युद्ध में शीघ्र चलने वाले ३ राम रूप के लिये ३ नमस्कार ४ सात्विक शरणागत वानर आदि के ५ स्वामी को ६ नमस्कार ७ असुरों के जीतने वाले ८ और निरंतर मारने वाले ९ श्री कृष्ण रूप के लिये ९ नमस्कार १० चारों ओर से मारने वाली सेनाओं के ११ स्वामी श्री कृष्ण रूप के लिये १२ नमस्कार १३ खड्ग धारी १४ महा-

× व्यापार कर्त्ता- प्रति ग्रह- तीन पैंड भूमि का लेना है और दान राजा वलि के समीप वसना है॥

न्वर्णनिष्कलंकरूपके लिये १५ नमस्कार १६ योगांत पर चौर भाव पाने वाले भक्तोंके १७ स्वामी निष्कलंक रूपके लिये १८ नमस्कार १९ क्षत्रियों के मध्य निरंतर विचरने वाले २० युद्ध में सब ओर घूमने वाले श्री परशुराम रूप के लिये २१ नमस्कार २२,२३ मुनि रूप श्री परशुरामजी के लिये २४ नमस्कार॥२०॥

नमो वञ्चते परिवंचते स्तायूनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमो नमः स्रकायिभ्यो जिघांᳫँसद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः॥२१॥

१ वञ्चते। २ परिवञ्चते। ३ नमः। स्तायूनाम्। ५ पतये। ६ नमः। ७ निषङ्गिणे। इषुधिमते। नमः। तस्कराणाम्। पतये। नमः। स्रकायिभ्यः। जिघांᳫँसद्भ्यः। नमः। मुष्णताम्। पतये। नमः। असिमद्भ्यः। नक्तञ्चरद्भ्यः। नमः। विकृन्तानाम्। पतये। नमः॥२१॥

ॐ नमो वंचत इत्यस्य (कुत्स ऋषिः निचृदतिधृतिश्छन्दः रुद्रो देवता)१

पदार्थः १ असुरों के ठगने वाले २ और सब ओर दैत्यों के अंशावतार मनुष्यों को ठगने वाले बुध रूप के लिये ३ नमस्कार ४ देवता पितरों को न देकर खाने वाले चोर रूप मनुष्यों के ५ स्वामी बुध रूप के लिये ६ नमस्कार ७ खड्ग धारी तर्कसधारी रघुरूप के लिये ९ नमस्कार १० देवता पितरों से विमुख जैनियों के ११ स्वामी ऋषभदेव रूप के लिये १२ नमस्कार १३ वज्र सहित चलने वाले १४ शत्रुओं को मारने वाले रुद्रांश रूप देवताओं के लिये १५ नमस्कार १६ प्रजा का धन हरने वाले राजाओं के १७ स्वामी को १८ नमस्कार १९ खड्गधारी २० रुद्रांश रूप निशाचरों के लिये २१ नमस्कार २२ ईर्षा से दूसरे मत वालों के नाशक यवनादि के २३ स्वामी को २४ नमस्कार ॥२१॥

नमऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमो नमऽइषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो नमऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नमऽआयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमः ॥२२॥

उष्णीषिणे। गिरिचरायेति गिरिऽचराय। नमः। कुलुञ्चानाम्। पतये। नमः। इषुमद्भ्य इतीषुमत्ऽभ्यः। धन्वायिभ्य इति धन्वायिऽभ्यः। वः। नमः। नमः। आतन्वानेभ्य इत्याऽतन्वानेभ्यः। च। प्रतिदधानेभ्य इति प्रतिऽदधानेभ्यः। वः। नमः। नमः। आयच्छद्भ्य इत्याऽयच्छत्ऽभ्यः। च। अस्यद्भ्य इत्यस्यत्ऽभ्यः। वः। नमः। नमः ॥२२॥

ओंनमऽउष्णीषिणऽइत्यस्य (कुत्सऋषिः निचृदष्टिश्छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः— १ ब्रह्मा विष्णु महेश महामाया और महानारायण का रूप धारण करने वाले २ वेद वाणी में विचरने वाले को ३ नमस्कार ४ प्रकाश धृति अमृत पुष्टि वृद्धि और योगलक्ष्मी के ५ स्वामी को ६ नमस्कार हे रुद्रांशरूप देवता आो ७ वाणधारी ८ और ९ धनुषसहित चलने वाले १० आपके लिये ११ नमस्कार १२ नमस्कार १३ धनुष में ज्याल गाने वाले १४ और १५ वाण को धनुष पर चढ़ाने वाले १६ आपके लिये १७ नमस्कार १८ नमस्कार १९ धनुष खैंचने वाले २० और २१ वाण चलाने २२ आप के लिये २३ नमस्कार २४ नमस्कार ॥२२॥

नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः शयानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः २३

विसृजद्भ्यः। च। विध्यद्भ्यः। वः। नमः। नमः। स्वपद्भ्यः। जागृद्भ्यः। वः। नमः। नमः। शयानेभ्यः। च। आसीनेभ्यः। वः। नमः। नमः। तिष्ठद्भ्यः। च। धावद्भ्यः। वः। नमः ॥२३॥

ॐनमो विसृज द्भ्य इत्यस्य (कुत्स ऋषिः निचृदतिजगतीछंदः रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ शत्रुओं पर बाण चलाने वाले २ और ३ शत्रुओं को ताड़न करनेवाले ४ आपके लिये ५,६ नमस्कार नमस्कार ७ सोते ८ जागते ९ तुम को १० नमस्कार ११ नमस्कार १२ लेटे १३ और १४ बैठे १५ तुमको १६ नमस्कार १७ नमस्कार १८ ठहरते १९ और २० दौड़ते २१ तुम को २२ नमस्कार।२३

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नम आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम उगणाभ्यस्तृंहतीभ्यश्च वो नमः॥२४

सभाभ्यः। च। सभापतिभ्यः। वः। नमः। नमः। अश्वेभ्यः। च। अश्वपतिभ्यः। वः। नमः। नमः। आव्याधिनीभ्यः। च। विविध्यन्तीभ्यः। वः। नमः। नमः। तृंहतीभ्यः। च। उगणाभ्यः। नमः। नमः॥२४॥

ॐनमः सभाभ्य इत्यस्य (कुत्स ऋषिः शक्करी छन्दः रुद्रा देवता) १

पदार्थः– सभा और सभापति धर्म का निश्चय करने से ईश्वर रूप हैं इसलिये कहते हैं; १ सभारूप २ और ३ सभापतिरूप ४ आप के लिये ५ नमस्कार ६ नमस्कार ७ मानस सूर्य रूप ८ और ९ अंतर्यामी रूप १० आप को ११ नमस्कार १२ नमस्कार १३ चारों ओर से वेधने वाले १४ और १५ विशेष छेदने वाले देव सेना रूप १६ आप को १७ नमस्कार १८ नमस्कार १९ मारने वाली २० और २१ ब्राह्मी आदि आपकी शक्तियों को २२ २३ नमस्कार नमस्कार।२४

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः॥२५

गणेभ्यः। च। गणपतिभ्यः। वः। नमः। नमः। व्रातेभ्यः। च।

व्रातपतिभ्यः। गृत्सेभ्यः। च। गृत्सपतिभ्यः। वः। नमः। नमः। विरूपेभ्यः। च। विश्वरूपेभ्यः। वः। नमः। नमः ॥ २५॥

ॐ नमो गणेभ्य इत्यस्य (कुत्सऋषिः- भुरिक् शक्करी छंदः रुद्रा देवताः) १

पदार्थः– १ गण रूप २ और ३ गणेश आदि रूप ४ आपके लिये ५ नमस्कार ६ नमस्कार ७ गृहस्थ रूप ८ और ९ राजा रूप १० ज्ञानी रूप ११ और १२ सन्यासी रूप १३ आप को १४ नमस्कार १५ नमस्कार १६ जीवन्मुक्त रूप १७ और १८ देहाभिमानी रूप १९ आप के लिये २० नमस्कार २१ नमस्कार॥ २५॥

नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमो नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नमः ॥ २६॥

सेनाभ्यः। च। सेनानिभ्यः। वः। नमः। नमः। रथिभ्यः। च। अरथेभ्यः। वः। नमो नमः। क्षत्तृभ्यः। च। सङ्ग्रहीतृभ्यः। वः। नमो नमः। महद्भ्यः। च। अर्भकेभ्यः। वः। नमो नमः ॥ २६

ॐ नमः सेनाभ्य इत्यस्य (कुत्सऋषिः- भुरिगतिजगती छन्दः रुद्रा दे०) १

पदार्थः– १ सेना रूप २ और ३ सेना पति रूप ४ आपके लिये ५ ६ नमस्कार ७ रथी ८ और ९ अरथी १० आपके लिये ११ नमस्कार १२ नमस्कार १३ सारथियों के प्रेरक १४ और १५ सारथी रूप १६ आपके लिये १७ नमस्कार १८ नमस्कार १९ जाति विद्या आदि से उत्कृष्ट २० और २१ बाल रूप २२ आपके लिये २३ नमस्कार २४ नमस्कार॥ २६॥

नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादे

भ्यः पुञ्जिष्टेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृग युभ्यश्च वो नमः २७

तक्षभ्यः। च। रथकारेभ्यः। वः। नमो नमः। कुलालेभ्यः। चाक र्मारेभ्यः। वः। नमो नमः। निषादेभ्यः। च। पुञ्जिष्टेभ्यः। वः। न मो नमः। श्वनिभ्यः। च। मृगयुभ्यः। वः। नमो नमः॥ २७॥

ओंनमस्तक्षभ्य इत्यस्य (कुत्सऋषिः निचृच्छक्करी छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ अपञ्ची कृत पंचतत्व रूप २ और ३ देह रूप रथ के कर्त्ता ४ आप के लिये ५ नमस्कार ६ नमस्कार ७ पञ्ची कृत पंच तत्व रूप ८ और ९ षट् कर्मिन मलरू प १० आप के लिये ११ नमस्कार १२ नमस्कार १३ षट् कमलस्थ देवता रूप १४ और १५ आत्म मति बिंब रूप १६ आप के लिये १७ नमस्कार १८ नमस्का र १९ मन वाणी प्रज्ञा रूप २० और २१ मन सहित पंच ज्ञानेन्द्रिय रूप २२ आ पके लिये २३ नमस्कार २४ नमस्कार॥ २७॥

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये च नमो नील ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च॥ २८॥

श्वभ्यः। च। श्वपतिभ्यः। वः। नमो नमः। च। भवाय। नमः। च। रुद्राय। नमः। च। शर्वाय। च। पशुपतये। च। नीलग्रीवाय। नमः। शितिकण्ठाय॥ च॥ २८॥

ओंनमः श्वभ्य इत्यस्य (कुत्सऋषिः आर्षी जगती छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ शुद्ध विषयवासना रूप २ और ३ मनो वृत्ति रूप ४ आप के लिये ५ नमस्कार ६ नमस्कार ७ और ८ पर्जन्य रूप के लिये ९ नमस्कार १० और ११ अ ग्नि रूप के लिये १२ नमस्कार १३ और १४ पाप नाशक के लिये १५ नमस्का र १६ संसार औषधि रूप के लिये १७ और १८ नील कंठ के लिये १९ नमस्कार २०

श्वेत कंठ रूद्र के लिये २१ नमस्कार ॥ २८॥

नमः॑ कप॒र्दिने॑ च॒ व्यु॑प्तकेशाय च॒ नमः॑ सहस्रा॒क्षाय॑ च श॒तध॑न्वने च॒ नमो॑ गिरिश॒याय॑ च शिपिवि॒ष्टाय॑ च॒ नमो॑ मी॒ढुष्ट॑माय॒ चेषु॑मते च २९

कप॒र्दिने॑। च॒। व्यु॑प्तकेशाय। नमः॑। च॒। सहस्रा॒क्षाय। च॒। श॒तध॑न्वने। नमः॑। च॒। गि॒रि॒श॒याय॑। च॒। शि॒पि॒वि॒ष्टाय॑। नमः॑। च॒। मी॒ढुष्ट॑माय। च॒। इषु॑मते। नमः॑॥ २९॥

ॐ नमः कपर्द्दिन इत्यस्य (कुत्स ऋषिः भुरिगतिजगती छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः– १ जटाजूट धारी २ और ३ मुंडित केश के लिये ४ नमस्कार ५ और ६ सहस्र नेत्र वाले ७ और ८ वड़ धनुष धारी के लिये ९ नमस्कार १० और ११ वेदवाणी वा कैलाश में रहने वाले १२ और १३ विष्णु रूप के लिये १४ नमस्कार १५ और १६ धर्म अर्थ काम मोक्ष से सींचने वाले १७ और १८ वाण धारी के लिये १९ नमस्कार॥ २९॥

नमो॑ ह्र॒स्वाय॑ च वाम॒नाय॑ च॒ नमो॑ बृह॒ते च॒ वर्षी॑यसे च॒ नमो॑ वृ॒द्धाय॑ च स॒वृधे॑ च॒ नमोऽग्र्या॑य च प्रथ॒माय॑ च॒॥ ३०॥

च॒। ह्र॒स्वाय॑। च॒। वा॒म॒नाय॑। नमः॑। च॒। बृ॒ह॒ते। च॒। वर्षी॑यसे। नमः॑। च॒। वृ॒द्धाय॑। च॒। स॒वृधे॑। नमः॑। च॒। अ॒ग्र्या॑य। च॒। प्र॒थ॒माय॑। नमः॑॥ ३०॥

ॐ नमो ह्रस्वायेत्यस्य (कुत्स ऋषिः विराडार्षी त्रिष्टुप् छंदः रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ और २ छोटे शरीर वाले ३ और ४ वामन रूप के लिये ५ नमस्कार ६ और ७ वड़े शरीर वाले ८ और ९ अति वृद्ध के लिये १० नमस्कार ११ और १२ अवस्था में अधिक १३ और १४ ज्ञानियों के साथ रहने वाले को १५ नम-

स्कार १६ और १७ जगत के आद्य १८ और १९ ब्रह्मरूप के लिये २० नमस्कार।३०

नमऽआशवे॑ चाजि॒राय॑ च॒ नमः॒ शीघ्र्या॑य च॒ शीभ्या॑य च॒ नम॒ऽऊर्म्या॑य चावस्व॒न्या॑य च॒ नमो॑ नादे॒याय॑ च द्वी॒प्या॑य च ॥ ३१ ॥

च। आशवे। च। अजिराय। नमः। च। शीघ्र्याय। च। शीभ्याय। नमः। च। ऊर्म्याय। च। अवस्वन्याय। नमः। च। नादेयाय। च। द्वीप्याय। नमः ॥ ३१ ॥

ओं नम आशव इत्यस्य (कुत्सऋषिः- स्वराडार्षी पंक्तिश्छंदः- रुद्रो देवता) १

पदार्थः- १ और २ जगत व्यापक ३ और ४ गंगा आदि तीर्थ रूप के लिये ५ नमस्कार ६ और ७ वेगवान वस्तु में आत्मा रूप ८ और ९ आत्म श्लाघी के आत्मा रूप के लिये १० नमस्कार ११ और १२ भूक, प्यास, शोक, मोह, जरा, मृत्यु नाम षट् ऊर्मि के आत्मा १३ और १४ पुष्कर आदि के आत्मा रूप के लिये १५ नमस्कार १६ और १७ नदियों में आत्मा रूप से वर्त्तमान १८ और १९ निर्जल भूमि में अवतार लेने वाले व्यास रूप के लिये २० नमस्कार ॥ ३१ ॥

नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ च कनि॒ष्ठाय॑ च॒ नमः॑ पूर्व॒जाय॑ चापर॒जाय॑ च॒ नमो॑ मध्य॒माय॑ चापग॒ल्भाय॑ च॒ नमो॑ जघ॒न्या॑य च॒ बुध्न्या॑य च ॥ ३२ ॥

च। ज्येष्ठाय। च। कनिष्ठाय। नमः। च। पूर्वजाय। च। अपरजाय। नमः। च। मध्यमाय। च। अपगल्भाय। नमः। च। जघन्याय। च। बुध्न्याय। नमः ॥ ३२ ॥

ओं ज्येष्ठायेत्यस्य (कुत्सऋषिः- स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दः- रुद्रो देवता) १

पदार्थः— १ और २ समष्टि रूप ३ और ४ व्यष्टि रूप के लिये ५ नमस्कार ६ और ७ जगत की आदि में हिरण्यगर्भ रूप से प्रगट होने वाले ८ और ९-

प्रलय में कालाग्नि रूप से प्रगट होने वाले के लिये १० नमस्कार ११ और १२ उत्पत्ति प्रलय के मध्य मनुष्य पशु पक्षी रूप से प्रकट होने वाले १३ और १४ निर्गुण रूप के लिये १५ नमस्कार १६ और १७ गोपाल रूप १८ और १९ व्यष्टि समष्टि प्राण रूप के लिये २० नमस्कार ॥ ३२॥

नमस्सोभ्यायचप्रतिसर्य्यायचनमोयाम्यायच क्षेम्यायचनमः श्लोक्यायचावसान्यायचनम उर्वर्य्यायचखल्यायच॥ ३३॥

चे। सोभ्याय। च। प्रतिसर्य्याय। नमः। च। याम्याय। च। क्षेम्याय। नमः। च। श्लोक्याय। च। अवसान्याय। नमः। च। उर्वर्य्याय। च। खल्याय। नमः॥ ३३॥

ॐनमः सोभ्या येत्यस्य (कुत्सऋषिः आर्षीत्रिष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः- १ और २ दोनों सूर्य व्यष्टि समष्टि के आत्मा ३ और ४ सायुज्य योग्य भक्तों के हृदय में आत्मा रूप प्रगट होने वाले को नमस्कार ६ और ७ यम रूप ८ और ९ मोक्ष रूप के लिये १० नमस्कार ११ और १२ वेदों के आत्मा १३ और १४ वेदान्त शास्त्र से प्राप्त होने वाले के लिये १५ नमस्कार १६ और १७ सब की उत्पत्ति स्थान परा शक्ति १८ और १९ सूर्य में व्यापक भग नाम महा पुरुष के लिये २० नमस्कार ॥ ३३॥

नमोवन्यायचकक्ष्यायचनमः श्रवायचप्रतिश्रवायचनम आशुषेणायचाशुरथायचनमः शूरायचावभेदिनेच ३४

चे। वन्याय। च। कक्ष्याय। नमः। च। श्रवाय। च। प्रतिश्रवाय। नमः। च। आशुषेणाय। च। आशुरथाय। नमः। च। शूराय। च। अवभेदिने। नमः॥ ३४॥

ओं नमो वन्या येत्यस्य (प्रजापतिर्ऋषिः स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छं० रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ और २ जल में प्रगट वडवानल रूप ३ और ४ शुष्क वन में प्रगट दावानल रूप के लिये ५ नमस्कार ६ और ७ शब्द रूप ८ और ९ प्रति शब्द रूप के लिये १० नमस्कार ११ और १२ शीघ्र सेना वाले १३ और १४ शीघ्र रथ वाले के लिये १५ नमस्कार १६ और १७ सूर १८ और १९ शत्रुनाशक के लिये २० नमस्कार॥ ३४॥

नमो॑ बि॒ल्मिने॑ च कव॒चिने॑ च॒ नमो॑ व॒र्म्मिणे॑ च व॒रू॒थिने॑ च॒ नमः॑ श्रु॒ताय॑ च श्रुतसे॒नाय॑ च॒ नमो॑ दु॒न्दु॒भ्या॒य चाहन॒न्या॒य च ॥ ३५ ॥

च। बिल्मिने। च। कवचिने। नमः। च। वर्म्मिणे। च। वरूथिने। नमः। च। श्रुताय। च। श्रुतसेनाय। नमः। च। दुन्दुभ्याय। च। आहनन्याय। नमः॥ ३५॥

ओं बिल्मन इत्यस्य (कुत्स ऋषिः स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ और २ शिरस्त्राण (खूद) धारी ३ और ४ कवच धारी के लिये ५ नमस्कार ६ और ७ मंत्रमय कवचधारी ८ और ९ चतुर्दश भुवनवासी के लिये १० नमस्कार ११ और १२ शास्त्र रूप १३ और १४ देवता असुरों के पठन योग्य शास्त्र रूप सेना वाले के लिये १५ नमस्कार १६ और १७ दुन्दुभी आदि वाजों के आत्मा १८ और १९ वजाने के साधन दंड आदि के आत्मा रूप को २० नमस्कार॥ ३५॥

नमो॑ धृ॒ष्णवे॑ च प्रमृ॒शाय॑ च॒ नमो॑ निष॒ङ्गिणे॑ चे॒षुधि॒मते॑ च॒ नम॑स्ती॒क्ष्णेष॑वे चायु॒धिने॑ च॒ नमः॑ स्वायु॒धाय॑ च सु॒धन्व॑ने च ॥ ३६ ॥

च। धृष्णवे। च। प्रमृशाय। नमः। च। निषङ्गिणे। च। इषु-

धिमते। नमः। च। तीक्ष्णेषवे। च। आयुधिने। नमः। च। स्वायुध
य। च। सधन्वने। नमः॥ ३६॥

ओंनमो धृष्णव इत्यस्य (कुत्स ऋषिः स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता) १

पदार्थः १ और २ अगल्भ ३ और ४ गमन शील पंडित रूप के लिये ५ नमस्का र ६ और ७ खड्ग धारी ८ और ९ तरकस धारी के लिये १० नमस्कार ११ और १२ असेह्य बाण वाले १३ और १४ अन्य शस्त्र धारी के लिये १५ नमस्कार १६ और १७ श्रेष्ठ आयुध त्रिशूल धारी १८ और १९ पिनाक धनुष धारी के लिये २० नमस्कार॥ ३६॥

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च॥ ३७

च। स्रुत्याय। च। पथ्याय। नमः। च। काट्याय। च। नीप्याय नमः। च। कुल्याय। च। सरस्याय। नमः। च। नादेयाय। च। वै शन्ताय। नमः॥ ३७॥

ओंनमः स्रुत्यायेत्यस्य (कुत्स ऋषिः - निचृदार्षी त्रिष्टुप् छंदः रूद्रो देवता) १

पदार्थः - १ और २ मुक्तिदाता ३ और ४ भक्ति मार्ग में दर्शन देने वाले के लिये ५ नमस्कार ६ और ७ विषम मार्ग में दर्शन देने वाले ८ और ९ संसार वृक्ष रूप के लिये १० नमस्कार ११ और १२ शरीरों में अंतर्यामी रूप से प्रगट १३ और १४ सरोवरों में आत्मा रूप से प्रकट होने वाले को १५ नमस्कार १६ और १७ नदियों के आत्मा १८ और १९ अल्प सरोवरों के आत्मा को २० नमस्कार॥ ३७॥

नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीध्र्याय चातप्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च॥ ३८॥

च। कूप्याय। च। अवट्याय। नमः। च। वीध्र्याय। च। आतप्या य। नमः। च। मेघ्याय। च। विद्युत्याय। नमः। च। वर्ष्याय।

च[१८]। अवर्ष्याय[१९]। नमः[२०]॥ ३८॥

ओंनमः कूप्यायेत्यस्य (कुत्सऋषिः भुरिगार्षी पंक्तिश्छंदः रुद्रो देवता) १

पदार्थः– १ और २ कूपमें आत्मा रूपसे विराजमान ३ और ४ गर्तजलमें आत्मा रूपसे विराजमान के लिये ५ नमस्कार ६ और ७ निर्मल आकाश रूप ८ और ९ आतप रूप के लिये १० नमस्कार ११ और १२ मेघ रूप १३ और १४ बिजली रूप के लिये १५ नमस्कार १६ और १७ वृष्टि रूप १८ और १९ अवृष्टि रूप के लिये २० नमस्कार॥ ३८॥

नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च॥ ३९॥

च[१]। वात्याय[२]। च[३]। रेष्म्याय[४]। नमः[५]। च[६]। वास्तव्याय[७]। च[८]। वास्तुपाय[९]। नमः[१०]। च[११]। सोमाय[१२]। च[१३]। रुद्राय[१४]। नमः[१५]। च[१६]। ताम्राय[१७]। च[१८]। अरुणाय[१९]। नमः[२०]॥ ३९॥

ओंनमो वात्यायेत्यस्य (कुत्सऋषिः स्वराडार्षी पंक्तिश्छंदः रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ और २ वायु रूप ३ और ४ प्रलय कालमें भी रहने वाले के लिये ५ नमस्कार ६ और ७ गृह भूमि रूप ८ और ९ गृह भूमि के देवता के लिये १० नमस्कार ११ और १२ प्रजापति रूप १३ और १४ दुःखनाशक के लिये १५ नमस्कार १६ और १७ उदय काल पर रक्त वर्ण सूर्य १८ और १९ उदय काल के पीछे कुछ रक्त वर्ण सूर्य रूप के लिये २० नमस्कार॥ ३९॥

नमः शङ्गवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय॥ ४०॥

च। शृङ्गवे। च। पशुपतये। नमः। च। उग्राय। च। भीमाय। नमः। च। अग्रेवधाय। च। दूरेवधाय। नमः। च। हन्त्रे। च। हनीयसे। नमः। हरिकेशेभ्यः। वृक्षेभ्यः। नमः। ताराय। नमः। ४०

ओंनमः शङ्गवइत्यस्य (परमेष्ठीप्रजापतिर्वादेवाऋषयः भुरिगतिशक्करीछंदः रुद्रोदेवता)

पदार्थः- १ और २ मोक्ष सुख देने वाले अथवा सुख रूप वेद वचन वाले ३ और ४ प्राणियों के पालक के लिये ५ नमस्कार ६ और ७ वायु रूप ८ और ९ शत्रु के भय दाता के लिये १० नमस्कार ११ और १२ आगे होकर मारने वाले १३ और १४ दूरसे मारने वाले के लिये १५ नमस्कार १६ और १७ मनुष्य आदि रूप से मारने वाले १८ और १९ मायोपाधि नाशक के लिये २० नमस्कार २१ हरित पत्ते वाले २२ कल्प वृक्ष रूप क रुद्रों के लिये २३ नमस्कार २४ भक्तों के पार करने वाले को २५ नमस्कार॥ ४०॥

नमः शम्भवायच मयोभवायचनमः शङ्करायचमयस्करायचनमः शिवायचशिवतरायच ४१

च। शम्भवाय। च। मयोभवाय। नमः। च। शङ्कराय। च। मयस्कराय। नमः। च। शिवाय। च। शिवतराय। नमः। ४१

ओंनमः शम्भवायेत्यस्य (परमेष्ठीप्रजापतिर्देवावाऋषयः स्वराडार्षीबृहतीछन्दः रुद्रोदेवता)

पदार्थः १ और २ सुख दाता ३ और ४ संसार क सुख दाता के लिये ५ नमस्कार ६ और ७ लौकिक सुख दाता ८ और ९ मोक्ष सुख दाता के लिये १० नमस्कार ११ और १२ कल्याण रूप १३ और १४ आनंद स्वरूप के लिये १५ नमस्कार॥ ४१

नमः पार्य्यायचावार्य्यायचनमः प्रतरणायचोत्तरणायचनमस्तीर्थ्यायचकूल्यायचनमः शष्प्यायचफेन्यायच ४२

च। पार्य्याय। च। अवार्य्याय। नमः। च। प्रतरणाय। च। उत्तरणाय। नमः। च। तीर्थ्याय। च। कूल्याय। नमः। च।

शष्प्याय। च। फेन्याय। नमः॥ ४२॥

ओंनमः पार्यायेत्यस्य (परमेष्ठीप्रजापतिर्वा देवा ऋषयः· निचृदार्षीत्रिष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः – १ और २ संसार समुद्र के परली पर जीवन मुक्त रूप ३ और ४ संसार के मध्य संसारी रूप के लिये ५ नमस्कार ६ और ७ मंत्र जप आदि के द्वारा पापतरण के कारण ८ और ९ तत्वज्ञान के द्वारा संसारोत्तरण के कारण रुद्र के लिये १० नमस्कार ११ और १२ तीर्थों में व्यापक तीर्थ रूप १३ और १४ तीर्थ घाट रूप के लिये १५ नमस्कार १६ और १७ कुशादि रूप १८ और १९ समुद्र रूप के लिये २० नमस्कार॥ ४२॥

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः किꣳशिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च ४३

च। सिकत्याय। च। प्रवाह्याय। नमः। च। किꣳशिलाय। च। क्षयणाय। नमः। च। कपर्दिने। च। पुलस्तये। नमः। च। इरिण्याय। च। प्रपथ्याय। नमः॥ ४३॥

ओंनमः सिकत्यायेत्यस्य (परमेष्ठीप्रजापतिर्वा देवा ऋषयः जगती छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः· १ और २ तीर्थ रज रूप ३ और ४ प्रवाह रूप के लिये ५ नमस्कार ६ और ७ शर्करा रूप ८ और ९ स्थिर जल प्रदेश रूप के लिये १० नमस्कार ११ और १२ जटा जूट धारी १३ और १४ सर्वान्तर्यामी के लिये १५ नमस्कार १६ और १७ ऊषर रूप १८ और १९ सुमार्ग रूप के लिये २० नमस्कार॥ ४३॥

नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च ४४

च। व्रज्याय। च। गोष्ठ्याय। नमः। च। तल्प्याय। च। गेह्याय।

य। नमः। च। हृदय्याय। च। निवेष्याय। नमः। च। काट्याय। च। गह्वरेष्ठाय। नमः॥ ४४॥

ओंनमइत्यस्य (परमेष्ठी॰ आर्षी त्रिष्टुप् छन्दो रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ और २ गौ समूह में व्यापक अथवा गोलो कस्थ व्रज रूप ३ और ४ गो शाला रूप अथवा गोलोक रूप के लिये ५ नमस्कार ६ और ७ शेष शय्या रूप ८ और ९ गृह देवता रूप के लिये १० नमस्कार ११ और १२ हृदयस्थ आत्मा रूप १३ और १४ सर्वत्र व्यापक के लिये १५ नमस्कार १६ और १७ दुर्गारण्य देश रूप १८ और १९ गुफा आदि में तापस रूप से निवास करने वाले के लिये २० नमस्कार॥ ४४

नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पाꣳसव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्व्याय च॥ ४५॥

च। शुष्क्याय। च। हरित्याय। नमः। च। पाꣳसव्याय। च। रजस्याय। नमः। च। लोप्याय। च। उलप्याय। नमः। च। ऊर्व्याय। च। सूर्व्याय। नमः॥ ४५।

ओंनमः शुष्क्यायेत्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा॰ निचृदार्षी त्रिष्टुप् छं॰ रुद्रो दे॰) १

पदार्थः १ और २ शुष्क काष्ठ रूप ३ और ४ हरित काष्ठ रूप के लिये ५ नमस्कार ६ और ७ धूल रूप ८ और ९ पराग रूप के लिये १० नमस्कार ११ और १२ जिस में गगन आदि नष्ट होता है उस परम पद रूप १३ और १४ परा संहित त्रिदेव रूप के लिये १५ नमस्कार १६ और १७ भूमि रूप १८ और १९ योग भूमि रूप के लिये २० नमस्कार॥ ४५।

नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नम आखिदते च प्रखिदते च नम इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिके

भ्यो देवाना ᳪ हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः ४६

च। पर्णाय। च। पर्णशदाय। नमः। च। उद्गुरमाणाय। च। अभिघ्नते। नमः। च। आखिदते। च। प्रखिदते। नमः। इषुकृद्भ्यः। नमः। च। धनुष्कृद्भ्यः। वः। नमः। देवानाम्। हृदयेभ्यः। किरिकेभ्यः। वः। नमः। विचिन्वत्केभ्यः। नमः। विक्षिणत्केभ्यः। नमः। आनिर्हतेभ्यः। नमः॥ ४६॥

ओं नमः पर्णायेत्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः स्वराट्प्रकृतिश्छं० रुद्रो दे०) १

पदार्थः १ और २ छन्द रूप ३ और ४ वेद रूप के लिये ५ नमस्कार ६ और ७ वैदिक कर्म में निष्ठा रखने वाले ८ और ९ योगनिष्ठ रूप के लिये १० नमस्कार ११ और १२ क्रोध आदि को कष्ट देने वाले १३ और १४ विषयों के दुखदाता योगनिष्ठ रूप के लिये १५ नमस्कार १६ जीवात्मा को बाण रूप करने वाले माण रूप रुद्रों के लिये १७ नमस्कार १८ और १९ प्रणव रूप धनुष का संधान करने वाले मन बुद्धि वाणी रूप २० आप के लिये २१ नमस्कार २२, २३ हृदय की समान प्रधान २४ वर्षा द्वारा जगत का पालन करने वाले अग्नि वायु सूर्य रूप २५ आप को २६ नमस्कार २७ धर्मात्मा और पापी को पृथक् करने वाले अग्नि आदि रूप के लिये २८ नमस्कार २९ पापनाशक अग्नि आदि रूप के लिये ३० नमस्कार ३१ नारायण से प्रकट अग्न्यादि रूप के लिये ३२ नमस्कार ४६

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित। आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ् मो च नः किं चनाममत्। ४७।

द्रापे। अन्धसः। पते। दरिद्र। नीललोहित। नः। आसाम्। प्रजानाम्। एषाम्। पशूनाम्। मा। भेः। मा। रोक्। च। किम्। चन। मा।

ग्राममन्॥४७॥

ओं द्रापइत्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः-भुरिगार्षी बृहती छन्दः रुद्रो दे०) १

पदार्थः १ हे पापी को नीच गति देने वाले २,३ सोम वा आत्म प्रति विंब के रक्षक ४ हे मायातीत ५ हे साकार शिव ६ हमारे ७ इन ८ पुत्र आदि वा प्राणों को ९ और इन १० गौ आदि वा इन्द्रियों को ११,१२ भय रहित करो १३,१४ पीड़ा रहित करो १५ और १६ किसी को भी १७,१८ रोगी वा संसार रोग से ग्रस्त न करो॥४७॥

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥४८॥

यथा। द्विपदे। चतुष्पदे। शं। अस्मिन्। ग्रामे। विश्वं। पुष्टं। अनातुरं। असत्। इमाः। मतीः। तवसे। कपर्दिने। क्षयद्वीराय। रुद्राय। प्रभरामहे॥४८॥

ओं इमा रुद्रायेत्यस्य (कुत्स ऋषिः आर्षी जगती छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ जिस प्रकार २ पुत्र आदि वा प्राण में ३ गौ आदि वा इन्द्रिय समूह में ४ सुख हो तथा ५ इस ६ वास स्थान वा ब्रह्मपुर शरीर में ७ सब प्राणी वा अन्तःकरण ८ पुष्ट ९ स्वस्थ वा संसार रोग से रहित १० हो वे उसी प्रकार हम ११ इन अपनी १२ बुद्धि आदि को १३ महा वली १४ जटा धारी १५ भक्त वा योग निष्ठों के वास स्थान १६ ईश्वर के लिये १७ समर्पण करते हैं अर्थात् उसका मनन करते हैं॥४८॥

या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी। शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे॥४९॥

रुद्र। या। ते। शिवा। विश्वाहा। शिवा। भेषजी। रुतस्य। शिवा। भेषजी। तनूः। तया। नः। जीवसे। मृड॥४९॥

ओं या ते रुद्र इत्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः-आर्ष्यनुष्टुप् छं० रुद्रो दे०) १

पदार्थः १हे रुद्र२ जो ३आप की ४आनंद स्वरूप ५मायाविकार की नाश क ६ मोक्षदाता ७ संसार रोग की औषधि ८ मन बुद्धि इन्द्रियों के रोग की ९ कल्याण रूप १० औषधि ११ सब प्राणियों की आत्मा परा शक्ति है १२ उस परा शक्ति से १३ हम को १४ जीवन के लिये १५ सुखी करो॥ ४९॥

परि॑ नो रु॒द्रस्य॑ हे॒तिर्वृ॑णक्तु॒ परि॑ त्वे॒षस्य॑ दुर्म॒तिर॑घा॒योः। अव॑ स्थि॒रा म॒घव॑द्भ्यस्तनुष्व॒ मीढ्व॑स्तो॒काय॒ तन॑याय मृड॥ ५०॥

रुद्रस्य। हेतिः। नः। परि वृणक्तु। त्वेषस्य। अघायोः। दुर्मतिः परि। मीढ्वः मघवद्भ्यः। स्थिरा। अवतनुष्व। तोकाय। तनयाय। मृड॥ ५०॥

ॐ परि न इत्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता) १

पदार्थः १ रुद्र का २ शस्त्र ३ हम को ४ त्याग करो ५ अर्थात् मत मारो जिस कारण हम संसार से निवृत्त हैं ५ पापियों पर क्रोधित ६ दंड देने के इच्छावान रुद्र की ७ द्रोह बुद्धि ८ हम को त्याग करो ९ हे कामनाओं की वर्षा करने वाले १० हवि युक्त यजमानों के लिये ११ दृढ़ धनुषों को १२ ज्या रहित करो १३ पुत्र १४ और पौत्र के लिये १५ सुख दो॥ ५०॥

मीढु॑ष्टम॒ शिव॑तम शि॒वो नः॑ सु॒मना॑ भव। प॒र॒मे वृ॒क्ष आयु॑धं नि॒धाय॒ कृत्तिं॒ वसा॑न॒ आ च॑र॒ पिना॑कं॒ बिभ्र॒दा ग॑हि॥ ५१॥

मीढुष्टम। शिवतम। नः। शिवः। सुमनाः। भव। परमे। वृक्षे। आयुधं। निधाय। कृत्तिं। वसानः। आचर। पिनाकं। बिभ्रत्। आगहि॥ ५१॥

{ष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता) १

ॐ मीढुष्टम इत्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः निचृदार्षी यवमध्या त्रि

पदार्थः १ हे धर्म अर्थ काम मोक्ष से सींचने वाले २ हे अत्यंत कल्याण कर्त्ता ३ हम पर ४ शांत ५ और हृष्ट चित्त ६ हूजिये और ७,८ संसार वृक्षपर ९ संहार संबंधी शस्त्र को १० रखकर ११,१२ मृग चर्म धारी अर्थात् मुनिरूप होकर १३ आओ अथवा १४ भक्तों के रक्षक पिनाक धनुष को १५ धारण करते हुए १६ आओ ॥ ५१॥

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः। यास्ते स हस्रं हेतयोन्यमस्मन्निवपन्तु ताः॥ ५२॥

विकिरिद्र। विलोहित। भगवः। ते। नमः। अस्तु। ते। याः। सहस्रं। हेतयः। ताः। अस्मत्। अन्यम्। निवपन्तु॥ ५२॥

ओं विकिरिद्रेत्यस्य (परमेष्ठी प्रजापति र्वा देवा ऋषयः आर्ष्यनुष्टुप् छंदः रुद्रो दे०)

पदार्थः १ हे उपद्रवनाशक २ युद्धरहित ३ हे भगवन् ४ तुम को ५ नमस्कार ६ हो ७ आपके ८ जो ९ अनंत १० संसार सम्बन्धी शस्त्र हैं ११ उनको १२ हम से १३ दूसरे अर्थात् संसार की उपाधि पर १४ छोड़ो॥ ५२॥

सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि॥ ५३॥

भगवः। तव। बाह्वोः। सहस्राणि। सहस्रशः। हेतयः। ईशानः। तासाम्। मुखा। पराचीना। कृधि॥ ५३॥

ओं सहस्राणीत्यस्य (परमेष्ठी प्रजापति र्वा देवा ऋषयः निचृदार्ष्यनुष्टुप् छंदः रुद्रो दे० १

पदार्थः १ हे षट् ऐश्वर्य से सम्पन्न २ आप की ३ भुजाओं के ४ बहुविध ५ अनंत ६ संहार सम्बंधी शस्त्र हैं ७ सूर्यरूप तुम ८ उन शस्त्रों के ९ मुखों को १० हमसे दूर करो॥ ५३॥

असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषां सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि॥ ५४॥

ये। असङ्ख्याताः। सहस्राणि। रुद्राः। भूम्याम्। अधि। तेषाम्। धन्वानि। सहस्रयोजने। अवतन्मसि॥ ५४॥

ॐ असंख्यातेत्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः विराडार्ष्यनुष्टुप्छं० रुद्रो दे०

पदार्थः १ जो २ असंख्यात ३ अनंत ४ ग्राम देवता आदि ५, ६ पृथिवी पर स्थित हैं ७ उनके ८ धनुषों को ९ दूर देश पर १० हम ज्या रहित करके निर्भय होते हैं। ॥५४

अस्मिन्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि। तेषाᳪं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ५५

भवाः। अस्मिन्। महति। अर्णवे। अन्तरिक्षे। अधि। तेषां। धन्वानि। सहस्र योजने। अवतन्मासि॥ ५५॥

दे० १

ॐ अस्मिन्नित्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः भुरिगार्ष्युष्णिक्छं० रुद्रा

पदार्थः १ जो ईशांश देवता २ इस ३ बड़े ४ मेघजलाधार ५ अन्तरिक्ष में ६ स्थित हैं ७ उनके ८ धनुषों को ९ दूर देश में १० हम ज्या रहित करके अभय होते हैं॥ ५५॥

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवᳪं रुद्रा उपश्रिताः तेषाᳪं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ५६

नीलग्रीवाः। शितिकण्ठाः। रुद्राः। दिवं। उपश्रिताः। तेषां। धन्वानि। सहस्र योजने। अवतन्मसि॥ ५६॥

दे० १

ॐ नीलग्रीवा इत्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः निचृदार्ष्यनुष्टुप्छं० रुद्रा

पदार्थः १ जो नील कंठ २ श्वेत कंठ ३ रुद्र ४ स्वर्गलोक में ५ स्थित हैं ६ उनके ७ धनुषों को ८ दूर देश में ९ ज्या रहित करके हम अभय होते हैं॥ ५६॥

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः तेषाᳪं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ५७

नीलग्रीवाः। शितिकण्ठाः। शर्वाः। अधः। क्षमाचराः। तेषां। धन्वानि। सहस्र योजने। अवतन्मसि॥ ५७॥

ॐ नीलग्रीवा इत्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः निचृदार्ष्यनुष्टुप्छं० रुद्रा दे० १

पदार्थः १ जो नील कंठ २ श्वेत कंठ ३ रुद्र ४ अधो भाग ५ पाताल में वर्त्तमान हैं ६ उनके ७ धनुषों को ८ दूर देश में हम ९ ज्या रहित करके अभय होते हैं ५७॥

ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि ५८

ये। शष्पिञ्जराः। नीलग्रीवाः। विलोहिताः। वृक्षेषु। तेषां। धन्वानि। सहस्त्रयोजने। अवतन्मसि। ५८॥

ॐ ये वृक्षेष्वित्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः निचृदार्ष्यनुष्टुप्छन्दः रुद्रो देवता)

पदार्थः—१ जो २ वृक्ष को जरा युक्त करने वाले ३ नील कंठ ४ तेजोमय शरीर वाले वृक्ष देवता ५ वृक्षों में स्थित हैं ६ उनके ७ धनुषों को ८ दूर देश में हम ९ ज्या रहित करके अभय होते हैं॥ ५८॥

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि ५९

ये। भूतानाम्। अधिपतयः। विशिखासः। कपर्दिनः। तेषाम्। धन्वानि। सहस्त्रयोजने। अवतन्मसि॥ ५९॥

ॐ ये भूतानामित्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः आर्ष्यनुष्टुप्छंदः रुद्रा देवताः)

पदार्थः—१ जो २ देव विशेषों के ३ स्वामी ४ कोई मुंडित शिर ५ कोई जटाधारी हैं ६ उनके ७ धनुषों को ८ दूर देश में हम ९ ज्या रहित करके अभय होते हैं॥ ५९॥

ये पथां पथिरक्षस ऐलबृदा आयुर्युधः। तेषां सहस्त्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ ६०॥

ये। पथाम्। पथिरक्षसः। ऐलबृदाः। आयुर्युधः। तेषाम्। धन्वानि। सहस्त्रयोजने। अवतन्मसि॥ ६०॥

ॐ ये पथामित्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः निचृदार्ष्यनुष्टुप्छं० रुद्रा देवताः)

पदार्थः १ जो २ मार्ग देवता ३ मार्गों के रक्षक ४ अन्नों से प्राणियों के पोषक

५ चोर अन्न के लिये युद्ध करने वाले हैं ६ उनके ७ धनुषों को ८ दूर देश में हम ९ ज्या रहित करके अभय होते हैं॥ ६०॥

येतीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ६१॥

ये। सृकाहस्ता इति सृकाऽहस्ताः। निषङ्गिणः। तीर्थानि। प्रचरन्तीति प्रऽचरन्ति। तेषाम्। धन्वानि। सहस्रयोजन इति सहस्रऽयोजने। अव तन्मसि॥ ६१॥

ॐ येतीर्थानीत्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः- निचृदार्ष्यनुष्टुप् छंदः रुद्रा देवताः)

पदार्थः १ जो २ वज्र हाथ में रखने वाले ३ खड्ग धारी ४ सब ओर ५ घूमते हैं ६ उनके ७ धनुषों को ८ दूर देश में हम ९ ज्या रहित करके अभय होते हैं॥ ६१॥

येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्। तेषां
सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ६२॥

ये। अन्नेषु। जनान्। विविध्यन्तीति विऽविध्यन्ति। पात्रेषु। पिबतः। तेषाम्। धन्वानि। सहस्रयोजन इति सहस्रऽयोजने। अव तन्मसि॥ ६२॥

ॐ येऽन्नेष्वित्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः- विराडार्ष्यनुष्टुप् छन्दः- रुद्रा देवताः)

पदार्थः- १ जो २ अन्नों में स्थित होने ३ प्राणियों को ४ धातु की विषमता करके रोगी करते हैं तथा ५ पानपात्र में स्थित होते ६ क्षीर आदि पान करने वाले मनुष्यों को धातु की विषमता करके रोगी करते हैं ७ उनके ८ धनुषों को ९ दूर देश में हम १० ज्या रहित करके अभय होते हैं॥ ६२॥

य एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ ६३॥

च। ये। रुद्राः। एतावन्तः। च। भूयाꣳसः। दिशः। वितस्थिर इति विऽतस्थिरे। तेषाम्। धन्वानि। सहस्रयोजन इति सहस्रऽयोजने। अव तन्मसि॥ ६३॥

ॐ यइत्यस्य (परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः निचृदार्ष्यनुष्टुप् छंदः रुद्रा देवताः)

पदार्थः १ और २ जो ३ रुद्र ४ इतने ५ और ६ कहे ऊएसे अधिक ७ दशोंदि शा में ८ स्थित हैं ९ उनके १० धनुषों को ११ दूर देश में हम १२ ज्यारहित कर के अभय होते हैं॥ ६३॥

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमो अस्तु ते नो ऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ६४

ये। दिवि। येषाम्। इषवः। वर्षम्। तेभ्यः। रुद्रेभ्यः। नमः। अस्तु। तेभ्यः। दश। प्राचीः। दश। दक्षिणा। दश। प्रतीचीः। दश। उदीचीः। दश। ऊर्ध्वाः। नमः। अस्तु। ते। नः। अवन्तु। ते। नः। मृडयन्तु। ते। यम्। द्विष्मः। च। यः। नः। द्वेष्टि। तम्। एषाम्। जम्भे। दध्मः ॥ ६४॥

ओंनमोऽस्त्वित्यस्य (परमेष्ठी० ऋषिः- निचृद्धृतिश्छन्दः रुद्रा देवताः) १

पदार्थः– १ जो रुद्र २ स्वर्गलोक में सूर्य आदि रूप से स्थित हैं ३ जिनके ४ बाण ५ वर्षा हैं ६ उन ७ रुद्रों के लिये ८ नमस्कार ९ हो १० उनके लिये ११ पूर्वदिशा में अंजलि हो १२ दक्षिण दिशा में अञ्जलि हो १३ पश्चिमदिशा में अञ्जलि हो १४ उत्तर दिशा में अञ्जलि हो १५ ऊर्द्ध्व दिशा में अञ्जलि हो १६ उनको नमस्कार १७ हो १८ वे १९ हम को २० रक्षा करो २१ वे २२ हम को २३ सुख दो २४ हम २५ जिस्से २६ द्वेष करते हैं २७ और २८ जो २९ हमसे ३० द्वेष करता है ३१ उसको ३२ इन रुद्रों के ३३ मुख में ३४ स्थापन करते हैं॥ ६४॥

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशो

दीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्योनमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः ॥ ६५॥

रुद्रेभ्यः। नमः। अस्तु। ये। अन्तरिक्षे। येषाम्। इषवः। वातः॥ शेषं पूर्ववत्॥ ६५॥

ओंनमोऽस्त्वित्यस्य (परमेष्ठी० ऋषयः- धृतिश्छन्दः रुद्रा देवताः) १

पदार्थः १ रुद्रों के लिये २ नमस्कार ३ हो ४ जो ५ अन्तरिक्ष में हैं ६ जिन के ७ वाण ८ वायु हैं शेष पूर्व की समान॥ ६५॥

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥ ६६॥

रुद्रेभ्यः। नमः। ये। पृथिव्याम्। येषाम्। इषवः। अन्नम्। शेषं पूर्ववत्॥ ६६॥

ओंनमोऽस्त्वित्यस्य (परमेष्ठी० ऋषयः- धृतिश्छन्दः रुद्रा देवताः) १

पदार्थः– १ रुद्रों के लिये २ नमस्कार ३ जो ४ पृथिवी पर हैं ५ जिन के ६ वाण ७ अन्न हैं शेष पूर्व की समान है ॥ ६६॥

इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूराम सूनु ज्वालाप्रसाद शर्म्म कृते शुक्लयजुर्वेदीय ब्रह्मभाष्ये शतरुद्रिय होमो नाम षोडशोऽध्यायः १६

सोलहवीं अध्याय में शतरुद्री का होम कह सत्रहवीं अध्याय में चित्य परिषेक आदि के मंत्रों को कहते हैं॥

अश्मन्नूर्जम्पर्वते शिश्रियाणामद्भ्य ओषधीभ्यो वनस्पतिभ्यो अधि सम्भृतम्पयः। तान्न इषमूर्जन्धत्त मरुतः स ँ रराणाः अश्मंस्ते क्षुन्मयि त ऊर्ग्यन्द्विष्मस्तन्ते शुगृच्छतु॥१॥

मरुतः। स ँ रराणाः। अश्मन्। पर्वते। शिश्रियाणाम्। ऊर्जम्। अद्भ्यः। ओषधीभ्यः। वनस्पतिभ्यः। अधि। सम्भृतम्। पयः। ताम्। इषम्। ऊर्जम्। नः। धत्त। अश्मन्। ते। क्षुत्। ताम्। ऊर्क्। मयि। यम्। द्विष्मः। तम्। ते। शुक्। ऋच्छतु॥१॥

अथाधिदैवम्– इस कंडिका में तीन मंत्र हैं उनको कहते हैं चित्य अग्नि को सींचता है उसका मंत्र १ पाषाण पर कुंभ को रखकर दूसरी बार सींचता है उसका मंत्र २ कुंभ को ग्रहण करता है और दक्षिण दिशा में छोड़ता है उसका मंत्र ३

ॐ अश्मन्नित्यस्य (मेधातिथिर्ऋषिः आर्षी त्रिष्टुप् छन्दः मरुतो देवता) १
ॐ अश्मन्नित्यस्य (तथा दैवी बृहती छन्दः अश्मा देवता) २
ॐ यमित्यस्य (तथा याजुषी बृहती छंदः शुक् देवता) ३

पदार्थः १ हे मरुत नाम देवताओ २ पूरे दाता तुम ३ मेघ वा सूर्य में ४ विंध्य हिमालय आदि पर्वत में ५ स्थित ६ अमृत रस को तथा ७ जलों ८ यव आदि ओषधियों ९ और १० अश्वत्थ आदि वृक्षों से १०,११ गौ द्वारा सिद्ध होने वाले १२ दुग्ध को १३ अर्थात् मेघजनित जलरूप और गौ से उत्पन्न दुग्धरूप १४,१५ अन्न और रस को १६ हमें १७ दीजिये १८ हे अग्ने १९ आपकी २० क्षुधा हो २१ आप का २२ सारभाग २३ मुझ को प्राप्त हो २४ हम जिससे २५ द्वेष करते हैं २६ उसको २७ आप का २८ शोक २९ प्राप्त करो॥१॥

अथाध्यात्मम् १ हे प्राणो २ पूरे दाता तुम ३ गगन मंडल के सूर्य वा मेघ में ४ और भूतात्मा में ५ स्थित ६ आत्म किरण रूप रस को तथा ७ कमलों के अन्तरिक्ष ८ इन्द्रियों की शक्ति ९ और इन्द्रिय गोलकों से १० अधिक ११ संपादित १२ आत्म किरण रूप अमृत को १३ अर्थात् उस १४ अन्न १५ और रस को १६ हम वाक् आदि ऋत्विजों के लिये १७ दीजिये १८ हे सर्वभक्षक आत्माग्ने १९ आप की २० क्षुधा हो २१ आप का २२ मोक्ष रूप रस २३ मुझ यजमान को प्राप्त हो २४ जिस काम वा संसार बंधन से २५ हम द्वेष करते हैं २६ उस को २७ तेरा २८ संताप २९ प्राप्त हो ॥ ८ ॥

इमा मे॑ऽअग्न॒ऽइष्ट॑का धे॒नवः॑ सन्त्वेका॑ च॒ दश॑ च॒ दश॑ च श॒तञ्च॑ श॒तञ्च॑ स॒हस्र॑ञ्च स॒हस्र॑ञ्चा॒युत॑ञ्च नि॒युतं॑ च नि॒युतं॑ च प्र॒युत॑ञ्चार्बु॒दञ्च॒ न्यर्बुदञ्च समु॒द्रश्च॒ मध्य॑ञ्चान्त॑श्च परा॒र्द्धश्चै॒ता मे॑ऽअग्न॒ऽइष्ट॑का धे॒नवः॑ सन्त्व॒मुत्रा॒मुष्मि॑ल्लो॒के ॥ २ ॥

अग्ने । इमाः । इष्टकाः । मे । धेनवः । सन्तु । एका । च । दश । च । दश । च । शतम् । च । शतम् । च । सहस्रं । च । सहस्रं । च । अयुतं । च । नियुतम् । च । नियुतं । च । प्रयुतम् । च । अर्बुदं । च । न्यर्बुदं । च । समुद्रः । च । मध्यं । च । अन्तः । च । परार्द्धः । अग्ने । एताः । इष्टकाः । अमुत्र । च । अमुष्मिन् । लोके । मे । धेनवः । सन्तु ॥ २ ॥

अथाधिदेवम्- कुंभ डालने के पीछे देखता हुआ लौट कर दक्षिण वेदी के श्रोणि समीप ईशान मुख ठहरता अपने हाथों को पसार कर अग्नि को स्पर्श करके दो मंत्र को स्वर से जपता है उस का पहिला मंत्र-

ओं इमामइत्यस्य (मेधातिथिर्ऋषिः निचृद्विकृतिश्छंदः अग्निर्देवता) १

पदार्थः- १ हे अग्ने २ ये ३ इष्टका ४ मेरे लिये ५ मन वांछित फल की देने वाली ६ हों उन की संख्या को कहते हैं ७ एक ८ और ९ दश १०, ११, १२, १३ और-

सौ १४,१५,१६,१७ और सहस्र १८,१९,२०,२१ और दश सहस्र २२ और २३ लक्ष २४ और २५,२६,२७ दश लक्ष कोट २८ और २९ अर्बुद ३० और ३१ अब्ज, खर्व, निखर्व, महापद्म, शंकु ३२ और ३३ समुद्र ३४ और ३५ मध्य ३६ और ३७ अंत ३८ और ३९ परार्द्ध ४० हे अग्ने ४१ ये अष्टादश संख्या वाली ४२ इष्टका ४३ दूसरे जन्म में ४४ और ४५,४६ परलोक में ४७ मेरे लिये ४८ मन वांछित फल को देने वाली ४९ हों॥

अथाध्यात्मम्–१ हे ब्रह्माग्नि २ ये ३ वेद वचन ४ मेरे लिये ५ मन वांछित फल के देने वाले ६ हों संख्या पूर्व की समान ४० हे ब्रह्माग्ने ४१ ये ४२ वेद वचन ४३ परलोक ४४ और ४५,४६ आत्मलोक में ४७ मेरे लिये ४८ मन वांछित फल के देने वाले ४९ हों इस संख्या से सिद्ध हुआ कि इति हास और पुराण आदि सब वेद ही हैं॥२॥ स्तुति प्रमाण को संस्कृत भाष्य में देखो॥३॥

ऋतवस्थऋता वृधऋतुष्ठास्थऋतावृधः।
घृतश्च्युतो मधुश्च्युतो विराजो नाम कामदुघा अक्षीयमाणाः॥३॥

ऋतस्थ। ऋतावृधः। ऋतुष्ठाः। स्थ। ऋतावृधः। ऋतुष्ठाः। घृतश्च्युताः। मधुश्च्युताः। विराजः। नाम। कामदुघाः। अक्षीयमाणाः। स्थ॥३॥

ओं ऋतवइत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिः विराडार्षीपं {क्तिश्छन्दः अग्निर्देवता} १

पदार्थः– हे इष्टके तुम १ सत्य की बढ़ाने वाली २ वसंत आदि रूप ३ हो ४ यज्ञ की वृद्धि देने वाली ५ वसंत आदि रूप में स्थित ६,७ घृत और मधु की

१	एक
१०	दश
१००	शत
१०००	सहस्र
१००००	अयुत
१०००००	नियुत
१००००००	प्रयुत
१०००००००	कोटि
१००००००००	अर्बुद
१०००००००००	न्यर्बुद
१००००००००००	खर्व
१०००००००००००	निखर्व
१००००००००००००	महापद्म
१०००००००००००००	शंकु
१००००००००००००००	समुद्र
१०००००००००००००००	मध्य
१००००००००००००००००	अंत
१०००००००००००००००००	परार्ध

देने वाली ८ विशेष दीप्तिमान ९,१० कामना पूर्ण करने वाली ११ और क्षयरहित १२ हो वे तुम मेरी मन वांछित कामना देने वाली हो ॥ ३॥

अथाध्यात्मम्- हे वेद वचनो तुम १ योग की वृद्धि करने वाले २ और प्रजापति के अंग रूप ३ हो ४ योग यज्ञ की वृद्धि करने वाले ५ प्रजापति के अंग में स्थित ६,७ साम और ऋचा के देने वाले ८ विशेष दीप्तिमान ९ प्रसिद्ध १० मोक्ष के दाता ११ और क्षयरहित १२ हो ॥ ३॥

समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्यं शिवो भव। ४॥

अग्ने। समुद्रस्य। अवकया। त्वा। परिव्ययामसि। अस्मभ्यं। पावकः। शिवः। भव॥ ४॥

अथाधिदैवम्- मंडूक अवका और वेतस शाखा को वांस में बांध कर खेत को विकर्षण करता है उसका पहिला मंत्र

ओं समुद्रस्येत्यस्य (मेधातिथिर्ऋषिः भुरिगार्षी गायत्री छन्दः अग्निर्देवता) १

पदार्थः- हे अग्ने २ जल के ३ शेवाल से ४ तुझे ५ सब ओर युक्त करता हूं ६ तुम ६ हमारे लिये ७ शोधक ८ और शान्त ९ हूजिये॥ ४॥

अथाध्यात्मम्- उत्थान को वर्णन करता है १ हे आत्माग्ने २ मन के ३ कमल से ४ तुझे ५ सब ओर युक्त करता हूं तुम ६ हम वा क आदि ऋत्विजों के लिये ७ शोधक ८ और शांत ९ हूजिये॥ ४॥

हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्यं शिवो भव॥ ५॥

अग्ने। हिमस्य। जरायुणा। त्वा। परिव्ययामसि। अस्मभ्यं। पावकः। शिवः। भव॥ ५॥

ओं हिमस्येत्यस्य (मेधातिथिर्ऋषिः भुरिगार्षी गायत्री छन्दः अग्निर्देवता) १

पदार्थः १ हे अग्ने २ हिम के ३ शेवाल से ४ तुझे ५ सब ओर ढकता हूं तुम ६ हमारे लिये ७ शोधक ८ और शान्त ९ हूजिये ॥ ५ ॥

अथाध्यात्मम्– १ हे आत्माग्ने २ निरुद्ध प्राण के ३ प्रकट होने के स्थान हृदय से ४ तुझे ५ युक्त करता हूं तुम ६ हम वा क आदि ऋत्विजों के लिये ७ शोधक ८ और शांत ९ हूजिये ॥ ५ ॥

उपज्मन्नुप॑वेत॒सेऽव॑तर न॒दीष्वा । अग्ने॑ पि॒त्तम॒पाम॑सि॒ मण्डू॑कि॒ ताभि॒रा ग॑हि॒ सेमन्नो॑ य॒ज्ञम्पा॑व॒कव॑र्णꣳ शि॒वं कृ॑धि ॥ ६ ॥

अग्ने । ज्मन् । उप । वेतसे । अव । तर । नदीषु । आ । अग्ने । पित्तम् । अपाम् । असि । मण्डूकि । ताभिः । आ । गहि । सा । इमम् । नः । यज्ञम् । पावकवर्णम् । शिवम् । कृधि ॥ ६ ॥

ओं उपज्मन्नित्यस्य (मेधातिथिर्ऋषिः–आर्षीत्रिष्टुप् छन्दः · अग्निर्देवता) १

पदार्थः १ हे अग्ने २ पृथिवी पर ३ आओ तथा ४ वेत वृक्ष में ५ उतरो ६ नदियों में ७ उतरो जिस कारण तुम ८ जलों के ९ तेज १० हो ११ हे मंडूकी १२ उन पूर्वोक्त जलों के द्वारा १३ प्रगट हो १४ वह मंडूकी तुम १५ इस १६ हमारे किये हुए १७ चयन रूप यज्ञ को १८ अग्नि समान तेजस्वी १९ और फल दान से शान्त २० करो ॥ ६ ॥

अथाध्यात्मम् १ हे आत्माग्ने २ मानस भूमि में ३ उतरो ४ हृदयरूप शाखा में जहां पर जीव ईश्वर नाम पक्षी स्थित होते हैं ५ उतरो ६ इन्द्रियों के आलयों में ७ उतरो जिस कारण तुम ८ ब्रह्मांभु रूप जलों के ९ तेज १० हो ११ हे आत्मप्रतिबिंब तुम १२ उन इन्द्रियों के साथ १३ आओ १४ जीवरूप तुम १५ इस १६ हमारे किये हुए १७ योग यज्ञ को १८ ब्रह्माग्नि रूप १९ और आनंद स्वरूप २० करो ॥ ६ ॥

अपामिदंन्न्ययनꣳ समुद्रस्य निवेशनम्। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव॥ ७॥

इदम्। अपाम्। न्ययनꣳ। समुद्रस्य। निवेशनम्। ते। हेतयः। अस्मत्। अन्यान्। तपन्तु। अस्मभ्यम्। पावकः। शिवः। भव॥ ७॥ अथाधिदैवम्

ओं अपामिदमित्यस्य (मेधातिथिर्ऋषिः आर्षी बृहती छन्दः अग्निर्देवता) १

पदार्थः – १ यह चित्य अग्नि का स्थान २,३ जल प्राप्ति का स्थान ४ समुद्र का ५ गृहरूप है हे अग्नि ६ तेरी ७ ज्वाला ८,९ हमारे विरोधी पुरुषों को १० तपाओ तुम ११ हमारे लिये १२ शोधक १३ और शांत १४ हो जाओ॥ ७॥

अथाध्यात्मम् – १ यह उत्थान अवस्था २ कमलान्तरिक्षों के ३ प्राप्ति का साधन ४ और मन को ५ मानस कमल में स्थापन करना है हे आत्माग्ने ६ तेरे ७ अस्त्र ८,९ हमारे विरोधी काम क्रोध आदि को १० क्लेश दो तुम ११ हम वा क् आदि ऋत्विजों के लिये १२ शोधक १३ और शांत १४ हूजिये॥ ७॥

अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च॥ ८॥

पावक। देव। अग्ने। रोचिषा। मन्द्रया। जिह्वया। देवान्। आ वक्षि। च। यक्षि॥ ८॥ अथाधिदैवम्

ओं अग्न इत्यस्य (वसुयुर्ऋषिः आर्षी गायत्री छन्दः अग्निर्देवता) १

पदार्थः १ हे शोधक २ देवता ३ अग्ने ४ ज्वालासमूह आहवनीयरूप ५ आनंदस्वरूप ६ होता के वाणी रूप से स्थित तुम ७ देवताओं को ८ आह्वान करो ९ और १० यजन करो॥ ८॥

अथाध्यात्मम् – १ हे देह के शोधक २ देवता ३ आत्माग्ने ४ ज्योति

रूप ५ अनाहत ध्वनि वती ६ जिव्हा से ७ सप्त कमलस्थ देवताओं को आव्हान करो ९ और १० यजन करो ॥ ८॥

सनः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२॥ऽ इहावह। उपयज्ञं हविश्च नः ९

पावक। दीदिवः। अग्ने। सः। देवान्। नः। इह। आवह। च। नः। हविः। यज्ञं। उप॥ ९॥

अथाधिदैवम्- १ हे पवित्र करने वाले २ दीप्तिमान ३ अग्ने ४ वह तुम ५ देवताओं को ६ हमारे ७ इस यज्ञ में ८ प्राप्त करो ९ और १० हमारे ११ हवि को १२,१३ यज्ञ पुरुष के समीप पहुंचाओ॥ ९॥

अथाध्यात्मम्- १ हे शोधक २ दीप्तिमान ३ आत्माग्ने ४ वह तुम ५ सप्त कमलस्थ देवताओं को ६ हम वाक् आदि ऋत्विजों के ७ इस शरीर में ८ प्राप्त करो ९ और १० हमारे ११ आत्म प्रति विंब को १२,१३ अंतर्यामी के समीप पहुंचाओ॥ ९॥

पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन्रुरुच उषसो न भानुना। तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः॥ १०॥

यः। पावकया। चितयन्त्या। कृपा। क्षामन्। रुरुचे। नः। उषसः। भानुना। न। यः। ततृषाणः। अजरः। एतशस्य। यामन्। रणे। तूर्वन्। न। घृणे। नू। आ॥ १०॥ **अथाधिदैवम्**

ओं पावक येत्यस्य भारद्वाज ऋषिः निचृदार्षीजगतीच्छंदः अग्निर्देवता। १

पदार्थः १ जो अग्नि २ पवित्र करने वाली ३ दृढ चयन करने वाली ४ सामर्थ्य वा दीप्ति से ५ पृथिवी पर ६ शोभा मान है ७ जैसे ८ उषा काल ९ अपने प्रकाश से शोभा देते हैं १० और ११ जो १२ पूर्णाहुति को पान करना चाहता १३ जरा रहित अग्नि १४,१५,१६ गमन कुशल घोड़े से काम लेने वाले युद्ध में १७,१८

शत्रुओं को मारता सा १९ दीप्ति से २० निश्चय २१ शोभमान होता है॥१०॥ **अथाध्यात्मम्** १ जो आत्माग्नि २ शोधक ३ चयन करने वाली ४ दीप्ति के साथ ५ मानस भूमि में ६ शोभा मान होता है ७ जैसे ८ उषा काल ९ अपने प्रकाश से १० और ११ जो १२ मोक्ष काल पर पूर्णाहुति को पान करना चाता १३ जरारहित आत्माग्नि १४ आत्म प्रति बिंब की १५ रमणीय १६ योग क्रिया में १७,१८ काम आदि को मारता सा १९ दीप्ति से २० निश्चय २१ शोभित होता है॥१०॥

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यं शिवो भव॥११॥

१ ते। २ हरसे। ३ शोचिषे। ४ नमः। ५ ते। ६ अर्चिषे। ७ नमः। ८ अस्तु। ९ ते। १० हेतयः। ११ अस्मत्। १२ अन्यान्। १३ तपन्तु। १४ अस्मभ्यं। १५ पावकः। १६ शिवः। १७ भव॥११॥

अथाधिदेवम्– सुवर्णखंड सहित स्रुक् में स्थित घृत को और दधि मधु घृत कुश मुष्टि से युक्त पानी को लेकर अध्वर्यु चित्य अग्नि में आरोहण करता है ब्रह्मा और यजमान अग्नि के दक्षिण ओर बैठते हैं उसका मंत्र ॐ नमस्त इत्यस्य (लोपामुद्रा ऋषिः भुरिगार्षी बृहती छंदः अग्नि दे०)१

पदार्थः हे अग्ने १ तेरे २ सब रस हर्त्ता ३ तेज के लिये ४ नमस्कार ५ तेरे ६ पदार्थ प्रकाशक तेज के लिये ७ नमस्कार ८ हो ९ तेरी १० ज्वाला ११ हम से १२ दूसरों को १३ तपाओ तुम १४ हमारे लिये १५ शोधक १६ और शांत १७ हो॥११॥ **अथाध्यात्मम्**· हे आत्माग्ने १ तेरे २ कामादि के हर्त्ता ३ तेज के लिये ४ नमस्कार ५ तेरे ६ ब्रह्मांशु रूप तेज के लिये ७ नमस्कार ८ हो ९ तेरे १० अस्त्र ११,१२ हम से अन्य कामादि को १३ तपाओ तुम १४ हमारे लिये १५ शोधक १६ और शांत १७ हो॥११॥

रान्तर्देवनरतिर्यगादि रूपेण प्रादुर्भूताय (च)[13] (अपगल्भाय)[14] (ग) विष्णुः (अ) ब्रह्मा (ल) शिवः (भ) भगवती तैः रूपैर पगतं तिर्गुणं ब्रह्म तस्मैः (नमः)[15] (च)[16] (जघन्याय)[17] जघनं गवादीनां पश्चाद्भाग स्तत्र भवो गोपाल स्तस्मै गोपाल रूपाय (च)[18] (बुध्न्याय)[19] बुध्ने-ऽन्तरिक्षे प्रादुर्भूताय व्यष्टि समष्टि प्राण रूपाय (नमः)[20] ॥३२॥ अष्टमो मंत्रः ॐ नमः सोम्याये त्यस्य कुत्सऋषि रार्षी त्रिष्टुप्छन्दो रुद्रो देवता[1] मंत्रार्थः (च)[2] (सोम्याय) (स) सूर्यः स मानस दिव्यभेदेन द्विविधस्तयो रात्मा रूपेण प्रादुर्भूताय (च)[3] (प्रति सर्याय)[4] नियोज्यानां सायुज्य योग्यानां भक्तानां हृदये आत्म रूपेण प्रादुर्भूताय (नमः)[5] यथा भगवद्वाक्यं अहमात्मा गुडाकेश सर्व भूताशय स्थित इति (च)[6] (याम्याय)[7] यम रूपाय (च)[8] (क्षेम्याय)[9] मोक्ष रूपाय (नमः)[10] (च)[11] (श्लोक्याये)[12] वेदाना

नमो ज्येष्ठायच कनिष्ठायच नमः पूर्वजायचापरजायच नमो मध्यमायचापगल्भाय च नमो जघन्यायच बुध्न्यायच ॥३२॥ नमः सोम्यायच प्रति सर्यायच नमो याम्याय च क्षेम्यायच नमः श्लोक्याय चावसान्यायच नमः उर्वर्य्यायच खल्यायच॥ ३३॥

मात्म रूपाय (च)[13] (अवसान्याय)[14] वेदांत शास्त्र लभ्याय। अवसानं समाप्तिर्वेदान्तो वा (नमः)[15] (च)[16] (उर्वर्य्याय)[17] उर्वरा सर्व सस्याढ्याभूः पराशक्ति रूपा तत्र व्यापकाय (च)[18] (खल्याय)[19] खले सूर्ये व्याप्तकाय भर्गाख्य महा पुरुष रूपाय (नमः)[20] ॥३३॥ नवमो मंत्रः ॐ नमो वन्याये त्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दो रुद्रो देवता[1] मंत्रार्थः (च)[2] (वन्याय) जले प्रादुर्भूत वडवानल रूपाय (च)[3] (कक्ष्याय)[4] शुष्क वने प्रादुर्भूत दावानल रूपाय (नमः)[5] (च)[6] (श्रवाय) शब्द रूपाय। श्रूयते इति श्रवः (च)[8] (प्रतिश्रवाय)[9] प्रति शब्द रूपाय (नमः)[10] (च)[11] (आशुषेणाय)[12] आशुः। शीघ्रा सेना यस्य तस्मै (च)[13] (आशुरथाय)[14] शीघ्रो रथो यस्य तस्मै (नमः)[15] (च)[16] (शूराय)[17] युद्ध धीराय (च)[18] (अवभेदिने)[19] अवभिनत्ति रिपून्नीचैर्विदारयति तस्मै (नमः)[20]

॥ ३४ ॥ दशमो मंत्रः ओं विल्मिन इत्यस्य कुत्स ऋषिः स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दो रुद्रो देवता १ **मंत्रार्थः** (च) (विल्मिने) विल्मं शिरस्त्राणमस्यास्ति तस्मै (च) (कवचिने) कवचधारिणे (नमः) (च) (वर्म्मिणे) मंत्रमय कवचधारिणे (च) (वरूथिने) चतुर्दश भुवनानि गृहाणि यस्य तस्मै। वरूथमिति गृहनाम निघ० ३।४ (नमः) (च) (श्रुताय) शास्त्ररूपाय (च) (श्रुतसेनाय) देवासुराणां ध्येयानि शास्त्राणि सेना यस्य तस्मै (नमः) (च) (दुन्दुभ्याय) दुन्दुभिवाद्यात्मरूपाय (च) (आहनन्याय) आहन्यन्ते ताड्यन्ते यैस्तेषां वाद्यसाधनदण्डादीनामात्मरूपाय (नमः) ॥ ३५ ॥

अथ नाभिमात्रे परिश्रिति स्वाहाकरोति तस्य प्रथमो मंत्रः ओं नमो धृष्णव इत्यस्य कुत्स ऋषिः स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दो

नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च ॥ ३४ ॥ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ॥ ३५ ॥ नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च ॥ ३६ ॥

रुद्रो देवता १ **मंत्रार्थः** (च) (धृष्णवे) धृष्णोति स प्रगल्भस्तस्मै (च) (प्रमृशाय) प्रमृशति विचारयति तस्मै मननशीलाय पंडितरूपाय (नमः) (च) (निषङ्गिणे) खड्गयुताय (च) (इषुधिमते) तूणयुताय (नमः) (च) (तीक्ष्णेषवे) तीक्ष्णाश्च सह्या बाणा यस्य तस्मै (च) (आयुधिने) अन्यायुधयुताय (नमः) (च) (स्वायुधाय) शोभनमायुधं त्रिशूलं यस्य तस्मै (च) (सुधन्वने) शोभनं धनुः पिनाकं यस्य तस्मै (नमः) ॥ ३६ ॥

द्वितीयो मंत्रः ऊँनमः स्रुत्यायेत्यस्य कुत्सऋषिर्निचृदार्षी त्रिष्टुप छन्दो रुद्रोदेवता १ **मंत्रार्थः** - (च) (स्रुत्याय) स्रुतिर्मुक्तिस्तं ददाति तस्मै मोक्ष मार्गरूपाय (च) (पथ्याय) पथिभक्ति मार्गेप्रादुर्भवनशीलाय (नमः) (च) (काट्याय) कुत्सितमटन्तिजनो यत्रेति काटो विषम मार्गस्तत्रापिप्रादुर्भवनशीलाय (च) (नीप्याय) संसारवृक्ष रूपाय (नमः) (च) (कुल्याय) देहेस्वन्तर्यामि रूपेण प्रादुर्भूताय (च) (सरस्याय) सरस्यात्मा रूपेण प्रादुर्भूताय (नमः) (च) (नादेयाय) नदीनामात्मरूपाय (च) (वैशन्ताय) वेशन्तोऽल्प सरस्तस्यात्म रूपाय (नमः)-॥ ३७॥

तृतीयो मंत्रः ऊँनमः कूप्यायेत्यस्य कुत्सऋषिर्भुरिगार्षी पंक्तिश्छंदो रुद्रो देवता १ **अथ मंत्रार्थः** (च)

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च॥ ३७॥ नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीध्र्याय चातप्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च॥ ३८॥

(कूप्याय) कूपरूपाय (च) (अवट्याय) गर्त रूपाय (नमः) (च) (वीध्र्याय) निर्मलाकाश रूपाय। इन्धी दीप्तौ विशेषेण इध्रं वीध्रं निर्मलमाकाशं (च) (आतप्याय) आतप रूपाय (नमः) (च) (मेघ्याय) मेघ रूपाय (च) (विद्युत्याय) विद्युद्रूपाय (नमः) (च) (वर्ष्याय) वृष्टि रूपाय (च) (अवर्ष्याय) आवृष्टि रूपाय (नमः) ॥ ३८॥

चतुर्थो मंत्रः ऊँनमो वात्यायेत्यस्य कुत्सऋषिः स्वराडार्षी पंक्तिश्छन्दो रुद्रो देवता॥ १॥ **मंत्रार्थः** - (च) (वात्याय) वाय्वात्म रूपाय (च) (रेष्म्याय) रिष्यन्तेनश्यन्ति भूतानि यत्रस प्रलय काल स्तस्मिन्नपि वर्त्तमानाय (नमः) (च) (वास्तव्याय) गृह भूमि रूपाय (च) (वास्तुपाय) गृह भूमेः रक्षकाय (नमः) (च) (सोमाय) प्रजापतये। प्रजापतिर्वै

चन्द्रमाः ६।१।३।१६ (च) (रुद्राय) रुत् दुःखं द्रावयति तस्मै दुःखनाशकाय (नमः) (च) (ताम्राय) उदयकाले रक्तवर्णसूर्यरूपाय (च) (अरुणाय) उदयोत्तरकाले ईषद्रक्तवर्णसूर्यरूपाय (नमः) ॥ ३९ ॥

पंचमो मंत्रः ॐ नमः शङ्गवइत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयो भुरिगतिशक्करी छन्दो रुद्रो देवता १ ॥

मंत्रार्थः (च) (शङ्गवे) शं मोक्षसुखं गमयति यद्वा शं सुखरूपा गावो वाचो वेदरूपा यस्य तस्मै (च) (पशुपतये) पशूनां प्राणिनां पालकाय (नमः) (च) (उग्राय) वायुरूपाय। वायुर्वा उग्रः श० ६।१।३।१३ (च) (भीमाय) शत्रुभयोत्पादकाय (नमः) (च) (अग्रेवधाय) अग्रे पुरो वर्त्तमानो हन्ति तस्मै (च) (दूरेवधाय) दूरे वर्त्तमानो हन्ति तस्मै (नमः) (च) (हन्त्रे)

नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च ॥ ३९ ॥ नमः शङ्गवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय ॥ ४० ॥ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ४१

मनुष्यादिरूपेण हन्त्रे (च) (हनीयसे) अतिशयेन मायोपाधेर्हन्त्रे (नमः) (हरिकेशेभ्यः) हरितपत्रेभ्यः (वृक्षेभ्यः) कल्पतरुरूपेभ्यः (नमः) (ताराय) तारयति भक्तान् तस्मै (नमः) — ॥ ४० ॥ षष्टो मंत्रः ॐ नमः शम्भवायेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः स्वराडार्षी बृहती छन्दो रुद्रो देवता ॥ १ मंत्रार्थः (च) (शम्भवाय) शं सुखं भवति यस्मात्तस्मै (च) (मयोभवाय) मयः संसारसुखं भवति यस्मात्तस्मै (नमः) (च) (शङ्कराय) शं लौकिकसुखं करो

तितस्मै (च) (मयस्कराय) मयो मोक्ष सुखं करोति तस्मै (नमः) (च) (शिवाय) कल्याण रूपाय (च) (शिवतराय) आनंद स्व-
रूपाय (नमः) ॥ ४१॥ सप्तमो मंत्रः ॐनमः पार्यायेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयो निचृद् आर्षी त्रिष्टुप् छन्दो रुद्रो दे० १

अथ मंत्रार्थः (च) (पार्य्याय) पारे संसाराब्धेः परतीरे जीवन मुक्त रूपेण भवस्तस्मै (च) (अवार्य्याय) अवारे अर्वाक्तीरे सं-
सार मध्ये संसारित्वेन भवस्तस्मै (नमः) (च) (प्रतरणाय) प्रकर्षेण मंत्रजपादिना पापतरण हेतुस्तस्मै (च) (उत्तरणाय) उत्कृ-
ष्टेन तत्त्वज्ञानेन संसारोत्तरण हेतुस्तस्मै (नमः) (च) (तीर्थ्याय) तीर्थेषु व्यापकाय तीर्थ रूपाय (च) (कूल्याय) तीर्थतट रू-
पाय (नमः) (च) (शष्प्याय) कुशादि रूपाय (च) (फेन्याय) समुद्र रूपाय (नमः) ॥ ४२॥

नमः पार्यायचावार्यायचनमः प्रतरणायचोत्तरणायचनमस्तीर्थ्यायचकूल्याय चनमः शष्प्यायच फेन्यायच ॥ ४२॥ नमः सिकत्यायच प्रवाह्यायचनमः किंशिलायच क्षयणायचनमः कपर्दिनेच पुलस्तयेचनमइरिण्यायचप्रपथ्यायच॥ ४३॥

अष्टमो मंत्रः ॐनमः सिकत्यायेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयो जगती छन्दो रुद्रो देवता १ **मंत्रार्थः** (च)
(सिकत्याय) सिकतासु व्यापकाय सिकता रूपाय (च) (प्रवाह्याय) प्रवाहे स्रोतसि व्याप्ताय प्रवाह रूपाय (नमः) (च) (किं-
शिलाय) कुत्सिताः क्षुद्राः शिलाः पाषाणा यत्र तस्मै शर्करा रूपाय (च) (क्षयणाय) स्थिरजल प्रदेश रूपाय (नमः) (च)
(कपर्दिने) जटाजूट धराय (च) (पुलस्तये) पूर्षु शरीरेषु अस्तिः सत्ता यस्य तस्मै सर्वान्तर्यामिने। रस्यलत्वं (नमः) (च)
(इरिण्याय) इरिण मूषरं वित्रण देशस्तद्रूपाय (च) (प्रपथ्याय) प्रकृष्टः पन्थाः प्रपन्थो बहु सेवितो मार्गस्तत्र भवस्तस्मै

(नमः) ॥ ४३ ॥ नवमो मंत्रः ओंनमो व्रज्यायेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषय आर्षी त्रिष्टुप् छन्दो रुद्रो देवता ।

मंत्रार्थः- (च) (व्रज्याय) व्रजे गो समूहे व्यापकाय यद्वा गो लोकस्थ व्रज रूपाय (च) (गोष्ठ्याय) गो शाला रूपाय यद्वा गो लोक रूपाय (नमः) (च) (तल्प्याय) शेष शय्या रूपाय (च) (गेह्याय) गृह देवता रूपाय (नमः) (च) (हृदय्याय) हृदये प्रादुर्भूत जीवात्म रूपाय (च) (निवेष्प्याय) सर्वत्र व्यापकाय (नमः) (च) (काट्याय) दुर्गारण्य देश रूपाय (च) (गह्वरेष्ठाय) गिरि गुहादौ तापस रूपेण निवास शीलाय (नमः) ॥ ४४ ॥ दशमो मंत्रः ओंनमः शुष्क्यायेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयो निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दो रुद्रो देवता ।

मंत्रार्थः (च) (शुष्क्याय) शुष्क काष्ठ रूपाय (च) (हरित्याय) हरित काष्ठ रू-

नमो॑ व्र॒ज्या॑य च गो॒ष्ठ्या॑य च॒ नम॒स्तल्प्या॑य च गेह्या॑य च॒ नमो॑ हृद॒य्या॑य च निवे॒ष्प्या॑य च॒ नमः॒ काट्या॑य च गह्वरे॒ष्ठाय॑ च ॥ ४४ ॥ नमः॒ शुष्क्या॑य च हरि॒त्या॑य च॒ नमः॑ पा॒ꣳस॒व्या॑य च रज॒स्या॑य च॒ नमो॒ लोप्या॑य चोल॒प्या॑य च॒ नम॒ ऊर्व्या॑य च सू॒र्व्या॑य च ॥ ४५ ॥ नमः॑ प॒र्णाय॑ च पर्णश॒दाय॑ च॒ नम॑ उद्गु॒रमा॑णाय चाभिघ्न॒ते च॒ नम॑ आखिद॒ते च॑ प्रखि-

पाय (नमः) (च) (पांꣳसव्याय) पांसु रूपाय (च) (रजस्याय) पराग रूपाय (नमः) (च) (लोप्याय) लुप्यते नश्यति गमनादि यत्र तस्मै परम पद रूपाय (च) (उलप्याय) (उ) विष्णुः (ल) शिवः (अ) ब्रह्मा (प) परा । परा सह त्रिदेव रूपाय (नमः) (च) (ऊर्व्याय) भूमि रूपाय (च) (सूर्व्याय) योग भूमि रूपाय (नमः) ॥ ४५ ॥ एकादशो मंत्रः ओंनमः पर्णायेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयः स्वराड् प्रकृतिश्छन्दो रुद्रो देवता ।

मंत्रार्थः- (च) (पर्णाय) छन्द रूपाय यथा स्मृतिः ऊर्ध्व मूलमधः शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेद वित् (च) (पर्णशदाय) पर्णानि छ-

न्दांसि विद्यमानानि यत्र तस्मै वेदरूपाय। शद् गतौ (नमः) (च) (उद्गुरमाणाय) गुरी उद्यमे तुदादिभ्यः शः उद्गुरते उद्यमं करोति उद्गुरमाणस्तस्मै वैदिककर्मनिष्ठरूपाय (च) (अभिघ्नते) अभिहन्ति कामादीन्तस्मै योगनिष्ठरूपाय (नमः) (च) (आखिदते) आसमन्तात्खिद्यते क्रोधादीन्तस्मै (च) (प्रखिदते) प्रकर्षेण खेदयति विषयान् तस्मै योगनिष्ठरूपाय (नमः) (इषुकृद्भ्यः) ये जीवात्मानं बाणरूपं कुर्वन्ति तेभ्यः प्राणरूपेभ्यः (नमः) (च) (धनुष्कृद्भ्यः) प्रणवरूपधनुःसन्धानकृद्भ्यो मनोबुद्धिवाग्रूपेभ्यः (वः) युष्मभ्यं (नमः) यथा श्रुतिः प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् भगवद्गीतायामपि भगवद्वाक्यं प्राणः प्राणवतामहं। इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना। बुद्धिर्बुद्धि-

दते च नम इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानाᳬ हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यः ॥ ४६ ॥

द्रापे ऽअन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ्मो च नः किं चनाममत् ॥ ४७ ॥

मतामहं (देवानाम्) (हृदयेभ्यः) हृदयवत्प्रधानभूतेभ्यः (किरिकेभ्यः) वृष्ट्यादिद्वारा जगत्कुर्वन्ति किरिकास्तेभ्यः (वः) युष्मभ्यः अग्निवायुसूर्यरूपेभ्यः (नमः) यथा श्रुतिः अग्निर्वायुरादित्य एतानि ह तानि देवानां हृदयानि ९।१।१।२३ (विचिन्वत्केभ्यः) विचिन्वन्ति पृथक् कुर्वन्ति धर्मिष्ठं पापिष्ठं च तेभ्योऽग्न्यादिभ्यः (नमः) (विक्षिणत्केभ्यः) विविधं क्षिणवन्ति हिंसन्ति पापं तेभ्योऽग्न्यादिभ्यः (नमः) (आनिर्हतेभ्यः) (आ) नारायणस्तेन निर्गतेभ्यः प्रादुर्भूतेभ्योऽग्न्यादिरूपेभ्यः हन्ति गत्यर्थः (नमः) — ॥ ४६ ॥

१२मंत्रः ओंद्रापइत्यस्य परमेष्ठीप्रजापतिर्वादेवाऋषयो भुरिगार्षी बृहती छन्दो रुद्रो देवता १ **मंत्रार्थः** (द्रापे) पापिनं कुत्सितगतिप्रापक। द्रा कुत्सायां हे (अन्धसः) सोमस्य आत्मप्रतिबिंबस्य वा (पते) पालक हे (दरिद्र) निष्परिग्रह मायातीत हे (नीललोहित) कण्ठे नीलो अन्यत्र लोहितः हे साकारशिवरूप (नः) अस्माकं (आसां) (प्रजानां) पुत्रादीनां प्राणानां वा श॰ १४।४।३।१४ (एषाम्) (पशूनां) गवादीनामिन्द्रियाणाम्वा (मा) (भेः) भयं मा कुरु। बहुलं छन्दसीति शपो लुक् (मा) (रोक्) भङ्गं मा कार्षीः रुजो भङ्गे (त्व) (किञ्चने) किमपि (मा) मैव (आममत्) रुग्नं संसाररोगग्रस्तं मा कार्षीः। अमरोगे लङि धातोरमागम आर्षः ॥४७॥ १३ मंत्रः ओं इमा रुद्रायेत्यस्य कुत्सऋषिरार्षीजगती छन्दो रुद्रो दे॰१

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् ॥४८॥ याते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ॥४९॥

मंत्रार्थः- (यथा) येन प्रकारेण (द्विपदे) पुत्रादौ प्राणे वा। प्राणो मनुष्याः श॰ १४।४।३।१३ ॥(चतुष्पदे) गवादिपशौ इन्द्रियसमूहे वा (शं) सुखं तथा (अस्मिन्) (ग्रामे) वासस्थाने ब्रह्मपुरशरीरे वा (विश्वं) प्राणिजातं। अन्तःकरणं वा (पुष्टं) समृद्धं (अनातुरं) स्वस्थं संसाररोगरहितं वा (असत्) भवति तथा वयं (इमाः) अस्मदीयाः (मतीः) बुद्धीः (तवसे) महते वलवते वा (कपर्दिने) जटिले (क्षयद्वीराय) वीराणां भक्तानां योगनिष्ठानाम्वा निवासस्थानाय (रुद्राय) ईश्वराय (प्रभरामहे) प्रहरामहे समर्पयामो रुद्रं स्मराम इत्यर्थः हृग्रहोर्भः ॥४८॥

१४ मंत्रः ओं याते रुद्र इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवाऋषय आर्ष्यनुष्टुप् छन्दो रुद्रो देवता १

मंत्रार्थः – हे (रुद्र) (या) (ते) तव (शिवा) आनंद स्वरूपा (विश्वाहा) विश्वं माया विकारं समन्तात् हन्ति सा (शिवा) मो
क्ष कारिणी (भेषजी) औषधि रूपा संसार व्याधिनि वर्त्तिका (रुतस्य) मनो बुद्धीन्द्रियाणां रोगस्य (शिवा) (भेषजी) औ
षधिः (तनूः) सर्वेषां भूतानामात्मा परा शक्तिः (तया) परा शक्त्या (नः) अस्मान् (जीवसे) जीवितुं (मृड) सुखय ॥४९॥
१५ मंत्रः ॐ परि न इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषय आर्षी त्रिष्टुप् छन्दो रुद्रो देवता १ ॥ **मंत्रार्थः** (रुद्रस्य)
(हेतिः) आयुधं (नः) अस्मान् (परिवृणक्तु) परितो वर्जयतु अस्मान् माहन्तु यस्माद्वयं संसारान्निवृत्तास्म (त्वेषस्य) दुष्ट

परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः। अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ॥५०॥ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव परमे वृक्ष आयुधन्निधाय कृत्तिं वसान आचर पिनाकम्बिभ्रदागहि ५१

तामुपरि क्रुद्धस्य (अघायोः) द्रोग्धुः (दुर्मतिः) द्रोह बुद्धिः (परि) परि वृणक्तु अस्मान्परितो वर्जयतु हे (मीढ्वः) कामा
भिवर्षुक (मघवद्भ्यः) मघं हविर्लक्षणं धनं विद्यते येषां ते यजमानास्तेभ्यः (स्थिरा) स्थिराणि दृढानि धनूंषि (अवतनु
ष्व) अवतार यज्या रहितानि कुरु किञ्च (तोकाय) पुत्राय (तनयाय) पौत्राय (मृड) सुखं देहि॥ ५०॥
१६ मंत्रः ॐ मीढुष्टम इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवाः ऋषयो निचृदार्षी यवमध्या त्रिष्टुप् छंदो रुद्रो देवता १
मंत्रार्थः – १ हे (मीढुष्टम) अतिशयेन धर्मार्थ काम मोक्षैः सेक्तः हे (शिवतमे) अत्यन्त कल्याण कर्त्तः (नः)

अस्मान्प्रति (शिवः) शान्तः (सुमनाः) हृष्टचित्तः (भव) किञ्च (परमे) (वृक्षे) संसार वृक्षे (आयुधं) संहार सम्बन्ध्यायुधं (निधाय) संस्थाप्य (कृत्तिं) मृगचर्म (वसानः) परिदधानः मुनिरूपं धारयन् (आचर) आगच्छ अथवा (पिनाकं) भक्तानां रक्षकं धनुः (बिभ्रत्) धारयन्सन् (आगहि) आगच्छ ॥ ५१ ॥ १७ मंत्रः ओं विकिरिद्रेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषय आर्ष्यनुष्टुप् छन्दो रुद्रो देवता १ **मंत्रार्थः** हे (विकिरिद्र) विविधिघाताद्युपद्रवनाशक हे (विलोहित) विगतयुद्ध हे (भगवः) भगवन् (ते) तुभ्यं (नमः) (अस्तु) (ते) तव (याः) (सहस्रं) अनन्तानि

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः । यास्ते सहस्रं हेतयोऽन्यमस्मन्नि वपन्तु ताः ॥ ५२ ॥ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ॥ ५३

(हेतयः) संहारसम्बन्ध्यायुधानि (ताः) (अस्मत्) (अन्यम्) संसारोपाधिं (निवपन्तु) ॥ ५२ ॥ १८ मंत्रः ओं सहस्राणीत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयो निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दो रुद्रो देवता १ **मंत्रार्थः** हे (भगवः) भगवन् षड्गुणैश्वर्यसम्पन्न (तव) (बाह्वोः) हस्तयोः (सहस्राणि) अनन्तविधानि (सहस्रशः) अनन्तानि (हेतयः) संहारसम्बन्ध्यायुधानि (ईशानः) आदित्यरूपस्त्वं । आदित्यो वाऽ ईशान आदित्यो ह्यस्य सर्वस्येष्टे श० ६।१।३।१७ (तासाम्) हेतीनां (मुखा) मुखानि शल्यानि (पराचीना) अस्मत्तः पराङ्मुखानि (कृधि) कुरु । करोतेः शपि लुप्ते

॥ य० ॥ माध्य० भा० ॥ वाज० सं० ॥

॥ १६ अ० ॥ ५३ कं० ॥ १७० ॥

ऋग्भ्रण्य पृक्त हृभ्यम्छन्द सीति होर्धिः ॥ ५३॥ अथावतान्नुहोति ॐ असंख्या तेत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवाऋर्षयो विराडार्ष्यनुष्टुप्छन्दो रुद्रो देवता १ मंत्रार्थः (ये) (असुङ्ख्याताः) असंख्यातानि (सहस्राणि) अनन्ताः (रुद्राः) ग्रामदेवतादि (भूम्याम्) (अधि) भूमेरुपरि स्थिताः (तेषाम्) (धन्वानि) धनूंषि (सहस्र योजने) परमे दूरे। एतद्ध परमं दूरं यत्सहस्रयोजनं श० ९।१।१।२८ (अवतन्मसि) अवतन्म अवतार् यामः अपज्यानि कृत्वास्मत्तो दूरं क्षिपामः ॥५४॥ ॐ अस्मिन्नित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवाऋषयः रुद्रा देवताः १

असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम् तेषा थं सहस्र योजने
ऽवधन्वानि तन्मसि ॥ ५४ ॥ अस्मिन्महत्यर्णवे ऽन्तरिक्षे भवा अधि
तेषा थं सहस्र योजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ ५५ ॥

अथ मंत्रार्थः ये (भवाः) ईशस्य प्रादुर्भावा देवाः (अस्मिन्) (महति) विशाले (अर्णवे) मेघजलाधारे। अर्णांसि जलानि विद्यन्ते यत्र तदर्णवम् अर्णांसो लोपश्चेति व मत्ययोऽन्त लोपश्च (अन्तरिक्षे) (अधि) आधिश्रित्य स्थिताः (तेषा थं) (धन्वानि) (सहस्र योजने) (अवतन्मसि) ॥ ५५॥ ॐ नीलग्रीवा इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवाऋषयोनिचृदार्ष्यनुष्टुप्छन्दो रुद्रा देवताः १ ये (नीलग्रीवाः) नीला श्यामा ग्रीवा येषां ते (शितिकण्ठाः) शितिः श्वेतः कण्ठो येषां ते (रुद्राः) (दिवं) द्युलोकं (उपश्रिताः) स्वर्गलोकस्थाः (तेषा थं) (धन्वानि) (सहस्र योजने)

(अवतन्मसि) ॥ ५६ ॥ ओं नीलग्रीवा इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयो निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दो रुद्रा दे० १
मंत्रार्थः– ये (नीलग्रीवाः) (शितिकण्ठाः) (शर्वाः) रुद्राः (अधः) अधो भागे (क्षमाचराः) पाताले वर्त्तमानाः (तेषा थं) (धन्वानि) (सहस्र योजने) (अवतन्मसि) ॥ ५७ ॥ ओं ये वृक्षेष्वित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयो निचृदार्ष्यनुष्टुप छन्दो रुद्रा देवताः १ **मंत्रार्थः**– (ये) (शष्पिञ्जराः) शष्पं बालतृणमस्त्यस्य स शष्पिन् वृक्ष-

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवं रुद्राउपश्रिताः । तेषा थं सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि ॥ ५६ ॥ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा शर्वा अधः क्षमाचराः तेषा थं सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि ॥ ५७ ॥ ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः । तेषा थं सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि ॥ ५८ ॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः । तेषा थं सहस्रयोजने ऽवधन्वानि तन्मसि ॥ ५९ ॥

स्तं जरन्ति जरायुक्तं कुर्वन्ति ते (नीलग्रीवाः) (विलोहिताः) विशेषेण रक्तवर्णास्तेजोमय शरीरा वृक्ष देवताः (वृक्षेषु) स्थिताः (तेषा थं) (धन्वानि) (सहस्र योजने) (अवतन्मसि) ॥ ५८ ॥ ओं ये भूतानामित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषय आर्ष्यनुष्टुप छन्दो रुद्रा देवताः १ **मंत्रार्थः**– (ये) (भूतानाम्) देव विशेषाणां (आधिपतयः)

स्वामिनः (विशिखासः) मुंडितशिरस्काः शिखा शब्दः केशोपलक्षकाः (कपर्दिनः) अन्येजटाजूटयुताः (तेषां) (धन्वानि) (सहस्रयोजने) (अवतन्मसि) ॥ ५९॥ ओं येपथामित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयो निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दो रुद्रा देवताः १ **मंत्रार्थः** – (ये) (पथाम्) अधिपतयो मार्गदेवताः अधिपतय इति पूर्वऽर्चोऽनुषङ्गः (पथिरक्षेसः) मार्गरक्षकाः (ऐलवृदाः) इलाऽन्नं ऐलमन्न समूहः यद्वा इला पृथ्वी तस्या इदमैलमन्नं तद्बिभ्रतिते ऐलभृतः त-

येपथां पथिरक्षस ऐलवृदा आयुर्युधः तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि ॥ ६० ॥ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः । तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ ६१ ॥

येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् । तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानितन्मसि ॥ ६२ ॥

ऐवपरोक्षवृत्त्या ऐलवृदाः अन्नैर्जन्तूनां पोषकाः (आयुर्युधः) अन्नार्थं युद्धकराः (तेषां) (धन्वानि) (सहस्रयोजने) (अवतन्मसि) ॥ ६०॥ ओं येतीर्थानीत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयो निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दो रुद्रा देवताः १ **अथ मंत्रार्थः** (ये) (सृकाहस्ताः) वज्रहस्ताः (निषङ्गिणः) खड्गधराः (आ) समन्तात (प्रचरन्ति) वधार्हाणां नाशाय (तेषां) (धन्वानि) (सहस्रयोजने) (अवतन्मसि) ॥ ६१॥

ओं येन्नेष्वित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयो विराडार्ष्यनुष्टुप् छन्दो रुद्रा देवताः १

मंत्रार्थः (ये)(अन्नेषु) भुज्यमानेषु स्थिताः सन्तः (जनान्)(विविध्यन्ति) धातुवैशम्यं कृत्वा विशेषेण ताडयन्ति रोगानुत्पादयन्ति तथा (पात्रेषु) पात्रस्थक्षीरोदकादिषु स्थिताः (सन्तः)(पिबतः) क्षीरादि पानं कुर्वतो जनान् विविध्यन्ति (तेषां ꣳ)(धन्वानि)(सहस्र योजने)(अवतन्मसि)॥ ६२॥ ओं य इत्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देव ऋषयो निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दो रुद्रा देवताः १

येऽएतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ ६३॥ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमो अस्तु ते नो ऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ६४

(च)(ये)(रुद्राः)(एतावन्तः)(च)(भूयाꣳसः) उक्तेभ्योऽतिबहवः (दिशः) दश दिशः (वितस्थिरे) आश्रिताः (तेषां ꣳ)(धन्वानि)(सहस्र योजने)(अव तन्मसि)॥ ६३॥ अथ प्रत्यवरोहान् जुहोति ओं नमोस्त्वित्यस्य परमेष्ठी प्रजापतिर्वा देवा ऋषयो निचृद्धृतिश्छन्दो रुद्रा देवताः॥ १॥ अथ मंत्रार्थः (ये)(दिवि) द्युलोके सूर्यादि रूपेण वर्त्तन्ते (येषां)(इषवः)(बाणाः)(वर्षम्) वृष्टिः (तेभ्यः)(रुद्रेभ्यः)(नमः)(अस्तु)(तेभ्यः)(दश प्राचीः)

पूर्वदिश्यञ्जलिरस्तु। यथा श्रुतिः दशवाऽऽञ्जलेरङ्गुल यो दिशि दिश्येवैभ्य एतदञ्जलिं करोति ६।१।१।३९ (दश दक्षिणा) दक्षिणा दिश्यञ्जलि रस्तु (दश प्रतीचीः) पश्चिमदिश्यञ्जलि रस्तु (दशोदीचीः) उत्तर दिश्यञ्जलिरस्तु (दशोर्ध्वीः) ऊर्द्ध्व दिश्यञ्जलि रस्तु तेभ्यः (नमः) (अस्तु) (ते) (नः) अस्मान् (अवन्तु, रक्षन्तु (ते) (नः) (मृडयन्तु) (ते) वयञ्च (यम्) (द्विष्मः) (च) (यः) (नः) (द्वेष्टि) (तम्) (एषाम्) रुद्राणां (जम्भे) दंष्ट्रा कराले मुखे (दध्मः) स्थापयामः ६४

ॐनमोस्त्वित्यस्य परमे० ऋषयो धृतिश्छन्दो रुद्रा देवताः१ **मंत्रार्थः**–(रुद्रेभ्यः) (नमः) (अस्तु) (ये) (अन्तरिक्षे) वर्त्तन्ते

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः॥ ६५॥ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः॥६६॥

(येषाम्) (इषवः) (वातः) वायुः (तेभ्यः) रुद्रेभ्यः (दश प्राचीः) (दश दक्षिणाः) (दश प्रतीचीः) (दशोदीचीः) (दशोर्द्ध्वाः) (तेभ्यः) (नमः) (अस्तु) (ते) (नः) (अवन्तु) (ते) (नः) (मृडयन्तु) (ते) वयञ्च (यम्) (द्विष्मः) (च) (यः) (नः) (द्वेष्टि) (तम्) (एषाम्) (जम्भे) (दध्मः)॥ ६५॥ ॐनमोस्त्वित्यस्य परमे० ऋ० धृतिश्छं० रुद्रा देवताः१ **मंत्रार्थः** (रुद्रेभ्यः) (नमः) (ये) (पृथिव्यां) वर्त्तन्ते (येषाम्) (इषवः) (अन्नम्) शेषं पूर्ववत्। सर्वं खल्विदं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचनेति श्रुत्यार्थः सिद्धः॥ ६६॥ इति श्रीभृगुवंशावतंस श्रीनाथूरामसूनु ज्वालाप्रसादशर्म्म कृते शुक्लयजुर्वेदीय ब्रह्मभाष्ये शतरुद्रियहोमो नाम षोडशोऽध्यायः॥ १६॥

षोडशोऽध्याये शतरुद्रिय होम उक्तः सप्तदशे चित्यपरिषेकादि मंत्रा उच्यन्ते॥

अस्यां कडिकायां त्रयो मंत्राः सन्ति तानाह चित्यं परिषिञ्चत्यग्नी द्दक्षिणेनिकक्षेऽद्रिं कृत्वा श्मन्नूर्जमित्य द्रेरधितस्य मंत्रः का
१८।२।१ अश्मंस्ते क्षुदित्य द्रौ कुम्भं कृत्वा मायित ऽऊर्गित्यादायें वंद्धिरपरं परिषिञ्चति तस्य मंत्रः का० १८।२।२ कुम्भमादत्ते
कुम्भेऽद्रिं कृत्वा दक्षिणस्यां वेदिश्रोणौ प्राङ्‌ति ष्टन्द क्षिणस्यां निरस्पाति तस्य मंत्रः का० १८।२।४ ॐ अश्मन्नित्यस्य मेधा
तिथिर्ऋषिरार्षीत्रिष्टुप्छन्दो मरुतो देवता १ ॐ अश्मन्नित्यस्य मे० दैवी बृहती छन्दोऽश्मा देवता २ ॐ यमित्यस्य मेधा०न्या
जुषी बृहती छंदः शुक् देवता ३

अथ मंत्रार्थः

एतद्वाऽएनं देवाः शतरुद्रियेण शमयित्वा थैनमेत द्रूप एवा शम

अश्मन्नूर्जम्पर्वते शिश्रियाणाम् मद्भ्य ओषधीभ्यो वनस्पतिभ्यो अधि सम्भृ
तम्पयः। तान्न इष मूर्जन्धत्त मरुतः सꣳ रराणाः अश्मंस्ते क्षुन्मयितऊ
र्यन्द्विष्म स्तन्ते सृ गृच्छतु।१॥

यंस्तथैवैनन मेवमेत च्छतरुद्रियेण शमयित्वा थैनमेतद्रूप एव शमयति। अद्भिः परिषिञ्चति शान्तिर्वाऽआपः श० ९।१।२।१
–२ हे [1](मरुतः) [2](सꣳ रराणाः) सम्यग्दातारो यूयं [3](अश्मन्) अश्मनि मेघे सूर्ये वा। असौ वाऽआदित्योऽश्मा श० ९।२।३।१४।
[4](पर्वते) विन्ध्य हिमवदादौ। [5](शिश्रियाणाम्) स्थितां। क्षूयतेः शानन्चि जुहोत्यादित्वाद्द्वित्वम् [6](ऊर्जम्) अमृतरसं तथा
[7](अद्भ्यः) जलेभ्यः [8](ओषधीभ्यः) यवादिभ्यः [9](वनस्पतिभ्यः) अश्वत्थादिभ्यः सकाशात् [10](अधि) अधिकं [11](सम्भृतम्) स
म्पादितं गो द्वारेण [12](पयः) दुग्धं [13](ताम्) द्विरूपां मेघोत्थजलरूपां गो समुत्थां पयोरूपां [14](इषम्) अन्नं [15](ऊर्ज्जम्) रसं [16](नः)

(धत्त) दत्त- हे (अश्मन्) अग्ने (ते) तव (क्षुत्) क्षुधा अस्तु (ते) तव (ऊर्क्) सारभागः (मयि) अस्तु (यम्) (द्विष्म) (तम्) (ते) तव (शुक्) शोकः (ऋच्छतु) गच्छतु ॥ १ ॥ अथाध्यात्मम्- (मरुतः) हे प्राणाः (सथंरराणाः) सम्यग्दातारो यूयं (अश्मन्) गगन मंडलस्य सूर्ये वा मेघे (पर्वते) भूतात्मनि (शिश्रियाणां) स्थितां (ऊर्जं) आत्मांशुरूप रसं तथा (अद्भ्यः) कमलान्तरिक्षेभ्यः (ओषधिभ्यः) इन्द्रियशक्तिभ्यः (वनस्पतिभ्यः) इन्द्रियगोलकेभ्यः सकाशात् (अधि) आधिक (सम्भृतं) सम्पादितं (पयः) आत्मांशुरूपममृतं (ताम्) (इषम्) अन्नं (ऊर्जं) रसं (नः) वागा ऋत्विग्भ्यः (धत्त) दत्त हे (अश्मन्) सर्वभक्षकात्मागने (ते) (क्षुत्) क्षुधा अस्तु (ते) (ऊर्क्) मोक्षरसः (मयि) यजमाने भवतु (यम्) कामं संसारबंधनं वा (द्विष्म) (तम्) (ते) (शुक्) सन्तापः (ऋच्छतु) गच्छतु ॥ १ ॥

इमामेऽअग्नऽइष्टकाधेनवः सन्त्वेकाच दशच दशच शतञ्च शतञ्च सहस्रंच सहस्रञ्चायुतञ्चायुतञ्च नियुतञ्च नियुतञ्च प्रयुतञ्चार्बुदञ्च न्यर्बुदञ्च समुद्रश्च मध्यञ्चान्तश्च परार्द्धश्चैता मेऽअग्नऽइष्टका धेनवस्सन्त्वमुत्रामुष्मिँल्लोके ॥ २ ॥

कुम्भनिरसनान्तरमपश्यन्नेत्य दक्षिणा वेदिश्रोणिसमीपे ईशानाभिमुखस्तिष्ठन्नात्मन उपरि हस्तौ प्रसार्य यावत्स्प्रष्टुं शक्नोति तावत्स्पृष्ट्वा कंडिकाद्वयं स्वरेणाजपति तस्य प्रथमो मंत्रः का० १८।२।१९ ॐ इमाम इत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिर्निचृद्विकृतिश्छन्दः अग्निर्देवता १

मंत्रार्थः- हे (अग्ने) (इमाः) (इष्टकाः) (मे) मह्यं मदर्थे (धेनवः) अभिमतफलद्रोग्ध्र्यः (सन्तु) तासां संख्यामाह (एका) (च) (दश) (च) सा (दश) दश गुणिता (च) अपि (शतम्) (च) तद्दशगुणितं (शतम्) (च) अपि (सहस्रं)

७७१९ [१८](च) तद्दशगुणितं [१९](सहस्रं) [२०](च) अपि [२१](अयुतं) १०००० [२२](च) तद्दशगुणितं [२३](नियुतम्) लक्षम् [२४](च) तद्दशगुणितं [२५](नियुतं) [२६](च)
[२७]अपि (अयुतम्) लक्षदशकं प्रयुतग्रहणं कोटेरूपलक्षकम् [२८](च) कोटेर्दशगुणं [२९](अर्वुदं) [३०](च) तद्दशगुणितं [३१](न्यर्वुदं) न्यर्वु
दशब्देनात्र संख्यान्तरेया एतेषां ग्रहणमत्र समुद्रान्तर्वर्तिनीनां खर्वनिखर्वमहापद्मशङ्कुसंज्ञानां संख्यानामुपलक्षक
म् यथा अर्बुदं दशगुणं खर्वं खर्वं दशगुणं निखर्वं निखर्वं दशगुणं महापद्मं महापद्मं दशगुणं शङ्कुः [३२](च) शङ्कुर्दशगुणाः
[३३](समुद्रः) [३४](च) स दशगुणः [३५](मध्यं) [३६](च) मध्यं दशगुणं [३७](अन्तः) [३८](च) अन्तः दशगुणः [३९](परार्द्धः) हे [४०](अग्ने) [४१](एताः) एकाद्य
ष्टादशसंख्या संज्ञासम्मिताः [४२](इष्टकाः) [४३](अमुत्र) अन्यजन्मनि [४४](च) [४५](अमुष्मिन्) [४६](लोके) परलोके [४७](मे) मह्यं [४८](धेनवः)

ऋतवस्थऋतावृधऋतुष्ठास्थऋतावृधः। घृतश्च्युतो मधुश्च्युतो विराजो
नाम कामदुघा अक्षीयमाणाः॥ ३॥

अभिमतफलदोग्ध्र्यः [४९](सन्तु)॥२॥ **अथाध्यात्मम्** — हे [१](अग्ने) ब्रह्माग्ने [२](इमाः) [३](इष्टकाः) वेदवाचः [४](मे) मदर्थं [५](धेन
वः) अभिमतफलदोग्ध्र्यः [६](सन्तु) शेषं पूर्ववत् हे [४०](अग्ने) ब्रह्माग्ने [४१](एताः) एकाद्याः [४२](इष्टकाः) वेदवाचः [४३](अमुत्र) परलोके
[४४](च) [४५](अमुष्मिन्) [४६](लोके) आत्मलोके [४७](मे) मह्यं [४८](धेनवः) अभिमतफलदोग्ध्र्यः [४९](सन्तु) यथा श्रुतिः वाग्वाऽअयमग्निर्वा
चाहि चितः स यदाहैकाच दशचानन्तश्च परार्धश्चेति वाग्वाऽएका वाग्दश वागनन्ता वाक् परार्धो वाचमेव तद्धेनुम्
कुर्वत तथैवैतद्यजमानो वाचमेव धेनुं कुरुते ९।१।२।१७ आत्मानमेव लोकमुपासीत स य आत्मानमेव लोकमुपास्ते न
हास्य कर्म क्षीयतेऽस्माद्ध्येवात्मनो यद्यत्कामयते तत्तत्सृजते १४।४।२।२८ —॥२॥

द्वितीयो मंत्रः ओं ऋतव इत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिर्विराडार्षीपंक्तिश्छंदोऽग्निर्देवता १

मंत्रार्थः हे इष्टका अहोरात्राणि वा ऋ० १।२।१८ यूयं (ऋतावृधः) ऋतं सत्यं वर्द्धयन्ति ताः (ऋतवः) वसन्तादि रूपाः (स्थ) (ऋता वृधः) यज्ञं वर्धयन्ति ताः (ऋतुष्ठाः) वसन्तादिषु स्थिताः (घृत श्च्युतः) घृत स्राविण्यः। श्रुतिरूक्षरणे (मधुश्च्युतः) मधु स्राविण्यः (विराजः) विशेषेण दीप्तिमत्यः (नाम) (कामदुघाः) कामस्य पूरयित्र्यः (अक्षीयमाणाः) क्षयरहिताः (स्थ) नामधेनवः सन्त्विति पूर्वेण सम्बन्धः ॥३॥ **अथाध्यात्मम्**- हे वेद वाचो यूयं (ऋतावृधः) सत्यस्य योगस्य वर्द्धयित्र्यः (ऋतवः) प्रजापतेरंगभूताः (स्थ) (ऋता वृधः) योग यज्ञस्य वर्द्धयित्र्यः

समुद्रस्य त्वा वकृयाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्यꣳ शिवो भव ४

(ऋतष्ठाः) प्रजापतेरंगस्थाः (घृतश्च्युतः) सामस्राविण्यः। घृतः इ सामानि श० ११।५।६।५ (मधुश्च्युतः) ऋग्स्राविण्यः। मधु ह वा ऽ ऋचः श० ११।५।६।५ (विराजः) विशेषेण दीप्तिमत्यः (नाम) प्रसिद्धाः (कामदुघाः) काम्यस्य मोक्षस्य द्रोग्ध्र्यः (अक्षीयमाणाः) क्षयरहिताः (स्थ) नामधेनवः सन्त्विति पूर्वेण सम्बन्धः ॥३॥

मण्डूकावकावेतस शाखा वेणौ बद्ध्वा कर्षति तस्य प्रथमो मंत्रः का० १८।२।१० ओं समुद्रस्येत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिर्भुरिगार्षी गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता १ **मंत्रार्थः** दक्षिण श्रोणेरारभ्य दक्षिणां सपर्यन्तं कर्षति हे (अग्ने)· (समुद्रस्य) समुन्दति क्लि न्नं करोति समुद्रो जलं तस्य (अवकया) शेवालेन (त्वा) त्वां (परिव्ययामसि) परितो वेष्टयामः उपरिभागे सर्वत्र विकर्षामः। इदन्नो मसि त्वंच अस्मभ्यं) (पावकः) शोधकः (शिवः) शान्तः (भव) ॥४॥

अथाध्यात्मम्- उत्थानं वर्णयतिहे (अग्ने) आत्माग्ने (समुद्रस्य) मनसः। मनोवैसमुद्रः श० ७।५।२।५२ (अवकया) मानसकमलेन (त्वा) त्वां (परिव्ययामसि) परितो वेष्टयामः त्वं (अस्मभ्यं) (पावकः) शोधकः (शिवः) शान्तः (भव ॥ ४॥

द्वितीयो मंत्रः ॐहिमस्येत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिर्भुरिग्गार्षी गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता १ **मंत्रार्थः** दक्षिण श्रोणया उत्तर श्रोणयन्तं कर्षतिहे (अग्ने) (हिमस्य) शैत्यस्य (जरायुणा) जरायुवदुत्पत्ति स्थानी येन शेवालेन (त्वा) त्वां (परिव्ययामसि) संवरणं कुर्मः त्वं (अस्मभ्यं) (पावकः) (शिवः) (भव) ॥ ५॥ **अथाध्यात्मम्**- हे (अग्ने) आत्माग्ने (हिमस्य) निरुद्धाचलप्राणस्य। अथैतस्यप्राणस्यापः शरीरं श० १४।४।३।२० (जरायुणा) प्रादुर्भाव स्थानी येन

हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्यं शिवो भव ५
उपज्मन्नुपवेतसेवतरं नदीष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि
सेमन्नो यज्ञम्पावकवर्णꣳ शिवं कृधि ॥६॥

हृदयेन (त्वा) त्वां (परिव्ययामसि) संवरणं कुर्मः त्वं (अस्मभ्यं) वागाद्यृत्विग्भ्यः (पावकः) (शिवः) (भव) ॥ ५॥

तृतीयो मंत्रः ॐउपज्मन्नित्यस्य मेधातिथिर्ऋषिरार्षी त्रिष्टुप् छन्दोऽग्निर्देवता १

मंत्रार्थः उत्तर श्रोणे रुत्तरां सपर्यन्तं कर्षतिहे (अग्ने) (ज्मन्) पृथिव्यां। सप्तम्यालुक् (उपावतरं) आगच्छतया (वेतसे) वञ्जुल शाखायां (उप) उपावतर (नदीषु) (आ) अध्युपावतर यस्मात्त्वं (अपाम्) (पित्तम्) तेजः (असि) एवमग्निं सम्बोध्य मण्डूकीमाह हे (मण्डूकि) (ताभिः) पूर्वोक्ताभिरद्भिः (आगहि) आगच्छ। शपिलोपे मलोपः (सा)

मण्डूकीत्वं (इमम्) (अस्माभिः) क्रियमाणं (यज्ञम्) चयन लक्षणं (पावक वर्णं) अग्नि समान तेजसं (शिवं) फल प्रदत्वेन शान्तं (कृधि) कुरु ॥ ६ ॥ **अथाध्यात्मम्** हे (अग्ने) आत्माग्ने (ज्मने) मानसभूमौ (उपावतेर) (वेतसे) हृदये हृदय रूप शाखायामेव जीवेशौ सुपर्णौ स्थितौ (उप) उपावतर (नदीषु) इन्द्रियालयेषु (आ) अध्युपावतर यस्मात्त्वं (अपाम्) ब्रह्मांशु रूपाणां (पित्तं) तेजः (असि) एवमात्माग्निं सम्बोध्यात्म प्रति विंब माह हे (मण्डूकि) आत्म प्रति विंब शक्तेत्वं (ताभिः) इन्द्रियैः (आगहि) आगच्छ (सा) जीव रूपात्वं (इमम्) (अस्माभिः) वैदिक मंत्रैः क्रियमाणं (यज्ञम्) योग यज्ञं (पावक वर्णं) ब्रह्माग्नि रूपं (शिवं) आनंद स्वरूपं (कृधि) कुरु अत्र श्रुतिः यद्वै वैनं विकर्षति जायतऽ

अपामिदंन्ययन थं समुद्रस्य निवेशनम् । अन्यांस्तेऽअस्मत्ते पन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यथं शिवोभव ॥ ७ ॥

एष एतद्यच्चीयते स एष सर्वस्माऽअन्नाय जायते सर्व मेतदन्नं यन्मंडूकोऽव का वेतस शाखा पशवश्च ह्येता आपश्च वनस्पतयश्च ९।१।२।२३— ॥ ६ ॥ चतुर्थो मंत्रः ॐ अपामिदमित्यस्य मेधातिथिर्ऋषि रार्षी बृहती छन्दोऽग्निर्देवता ।

मंत्रार्थः उत्तरां साद्दक्षिणां संकर्षति (इदम्) चित्याग्नि स्थानं मंडूक्य वका वेतस लक्षणं वा (अपाम्) (न्ययन थं) उदक प्राप्ति साधनं (समुद्रस्य) (निवेशनम्) गृह स्थानीयं तद्रूप हे अग्ने (ते) तव (हेतयः) ज्वालाः (अस्मत्) (अन्यान्) अस्मद्विरोधिनः पुरुषान् (तपन्तु) क्लेशयन्तु त्वं (अस्मभ्यम्) अस्मदर्थं (पावकः) शोधकः (शिवः) शान्तः (भव) ॥ ७ ॥ **अथाध्यात्मम्** — (इदम्) उत्थानं (अपाम्) कमलान्तरिक्षाणां (न्ययने थं) प्राप्ति साध

नं (समुद्रस्य) मनसः (निवेशनम्) मानसकमले स्थापनं हे आत्माग्ने (ते) तव (हेतयः) अस्त्राणि (अस्मत्) (अन्यान्) कामक्रोधादीन् (तपन्तु) त्वं (अस्मभ्यं) वागाद्युत्विग्भ्यः (पावकः) (शिवः) (भव) ॥ ७ ॥

पक्षपुच्छानि प्रान्ताद् आरभ्यात्म सम्मुखं सन्धिपर्यन्तं कर्षति तस्य प्रथमो मंत्रः का० १८।२।११ ओं अग्ने पावकेत्यस्य वसुयुर्ऋषिरार्षी गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता १ **मंत्रार्थः** दक्षिणं पक्षं विकर्षति हे (पावक) शोधक (देव) (अग्ने) (रोचिषा) ज्वालासमूहेनाहवनीयात्मना (मन्द्रया) मदनीयया (जिह्वया) होतृवाग्रूपेणावस्थितस्त्वं (देवान्) (आवक्षि) आवह (च) (यक्षि) यज द्वावग्ने रधिकारौ हौत्रमाहवनीयरूपेण हविर्ग्रहणं चात एव स्तूयते

अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया । आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ ८ ॥

स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२॥ऽ इहा वह । उप यज्ञं हविश्च नः ॥ ९ ॥

वहते र्यजेश्च लोण्मध्यमैकवचने शपि लुप्ते ढत्वषत्वादिके कृते वक्षि यक्षीति रूपम् ॥ ८ ॥

अथाध्यात्मम् - हे (पावक) देहस्य शोधक (देव) (अग्ने) आत्माग्ने (रोचिषा) ज्योतिषा (मन्द्रया) अनाहतध्वनिवत्या (जिह्वया) (देवान्) सप्तकमलस्थान् (आवक्षि) आवह (च) (यक्षि) यज अत्र श्रुतिः आत्मा न मग्रे विकर्षति । आत्मा ह्येवाग्रे सम्भवतः सम्भवति ९। १।२।२९— ॥ ८ ॥

द्वितीयो मंत्रः ओं स न इत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिर्निचृदार्षी गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता १ **मंत्रार्थः** हे (पावक) पावयितः (दीदिवः) दीप्तिमन् (अग्ने) (सः) त्वं (देवान्) (नः) अस्माकं (इह) यज्ञे (आवह) आनय (च) (नः) (हविः) (यज्ञं)

(उप) यज्ञपुरुषसमीपेआपय॥९॥ **अथाध्यात्मम्**– हे (पावक) शोधक (दीदिवः) दीप्तिमन् (अग्ने) आत्माग्ने (सः) त्वं (देवान्) सप्त कमल स्थान् (नः) वागाद्यृत्विजां (इह) शरीरे (आवह) (च) (नः) (हविः) आत्मप्रतिविंवं (यज्ञेश) (उप) अंतर्यम्यात्म समीपे प्रापय॥९॥ तृतीयो मंत्रः ओंपावकयेत्यस्य भारद्वाजऋषिर्निन्द्रदार्षी जगती छन्दोऽग्निर्देवता १ **मंत्रार्थः** (यः) अग्निः (पावकया) पावयित्र्या (चितयन्त्या) चेतयन्त्या यज्ञाद्दढ़चयकारिण्या (कृपा) सामर्थ्येन दीप्त्या वा (क्षामन्) क्षाम्णि पृथिव्यां (रुरुचे) शोभते (न) यथा (उषसः) उषसः कालाः (भानुना) स्वप्रकाशेन रोचन्ते (न) च (यः) (ततृषाणः) पूर्णाहुतिं पिपासुः। ञितृषा पिपासा याम् वहुलं छन्दसीति ह्वादित्वाच्छ्लः

पावकया यश्चितयन्त्या कृपाक्षामन्रुरुच उषसो न भानुना। तूर्वन्नयामन्नेतशस्य नूरण आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः॥१९॥

नचिन्म्लु ढ्रिवे (अजरः) जरारहितोऽग्निः (एतशस्य) गमनकुशलस्याश्वस्य (यामन्) यामनि नियामके (रणे) युद्धे (तूर्वन्) शत्रून् हिंसन् (न) इव (घृणेन) घृणिना दीप्त्या। घृणिरिति दीप्तिनामनिघ० १।१७ सुपांसुलुगिति विभक्तेः शेआदेशः (नू) निश्चितमेव (आ) आरुरुचे॥१९॥ **अथाध्यात्मम्**– (यः) आत्माग्निः (पावकया) पावयित्र्या (चितन्त्या) चयनकारिण्या (कृपा) दीप्त्या सह (क्षामन्) मानसभूमौ (रुरुचे) (न) यथा (उषसः) उषसः कालाः (भानुना) स्वप्रकाशेन (न) च (यः) (ततृषाणः) मोक्षकाले पूर्णाहुतिं पिपासुः (अजरः) जरारहित आत्माग्निः (एतशस्य) आत्मप्रतिविंवस्य। असौवाऽआदित्य एषोऽश्वः श० ६।३।१।२९ (रणे) रमणीये (यामन्) यामनि योग

क्रियायां (तूर्वन्) कामादीन् हिंसन् (न) इव (घृणेन) दीप्त्या (नू) निश्चितमेव (श्री) आरुस्त्वे शोभते ॥ १० ॥

हिरण्यशकलसहितं स्रुकस्थमाज्यं दधिमधुघृत कुशमुष्टियुतापात्रीएतद्द्वयमादायाध्वर्युश्चित्याग्निमारोहति ब्रह्म-यजमानौतु अग्नेर्दक्षिणत उपविशतः तस्य मंत्रः का० १८।३।५ ॐनमस्त इत्यस्य लोपामुद्राऋषिर्भुरिगार्षी बृहती छंदोऽग्निर्देवता १ **अथ मंत्रार्थः** हे अग्ने (ते) तव (हरसे) हरति सर्वरसानिति हरः तस्मै। असुन् प्रत्ययः (शोचिषे) तेजसे (नमः) (ते) तव (अर्चिषे) पदार्थप्रकाशक तेजसे (नमः) (अस्तु) (ते) (हेतयः) (अस्मत्) (अन्यान्) (तपन्तु) त्वं (अ-स्मभ्यं) (पावकः) (शिवः) (भव) ॥ ११ ॥ **अथाध्यात्मम्** – हे आत्माग्ने (ते) तव (हरसे) कामादीनां हर्त्रे (शोचिषे)

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यं शिवो भव। ११।

नृषदे वेडप्सुषदे वेड्बर्हिषदे वेड्वनसदे वेट्स्वर्विदे वेट् ॥ १२ ॥

तेजसे (नमः) (ते) तव (अर्चिषे) ब्रह्मांशुरूपाय (नमः) (अस्तु) (ते) (हेतयः) अस्त्राणि (अस्मत्) (अन्यान्) कामादीन् (तपन्तु) त्वं (अस्मभ्यं) (पावकः) (शिवः) (भव) ॥ ११ ॥ स्वयमातृण्णायां पञ्च गृहीतं जुहोत्निभिवद्धिरण्यादर्शनंच। तस्य मंत्रः १–५ ॐ १, ५ मांत्रयोर्लोपामुद्राऋषिर्दैवी बृहती छंदोऽग्निर्देवता ॐ २, ३, ४ मंत्राणां लो० दैवी पंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता **मंत्रार्थः** (नृषदे) मनुष्येषु सीदति प्राणाग्निस्तस्मै (वेट्) हविर्दत्तं (अप्सुषदे) उदकेषु और्व-रूपेण सीदति तस्मै (वेट्) (बर्हिषदे) बर्हिषि यज्ञे आहवनीयादिरूपेण सीदति तस्मै (वेट्) (वनसदे) वनं वृक्षसमूह

स्तत्र दावाग्नि रूपेण सीदतितस्मै (वेट्)(स्वर्विदे) स्वः स्वर्गे आदित्य रूपेण विद्यतेतस्मै (वेट्) वषडस्तु॥ १२॥

अथाध्यात्मम् - (नृषदे) मनुष्येषुप्राणेषु सीदतिय आत्माग्निस्तस्मै (वेट्) हविर्दत्तं यथा श्रुतीः। प्राणो मनुष्याः १४।४।३। १३ प्राणः स्वय मात्रणा प्राणेतदन्नं दधाति ९।२।१।५ (अप्सुषदे) कमलान्तरिक्षेषु सीदतितस्मै (आत्माग्नये)(वेट्)(वर्हिषदे) योग यज्ञे सीदतितस्मा आत्माग्नये (वेट्)(वनसदे) स्थूल सूक्ष्म कारण शरीरेषु यद्वेन्द्रियालयेषु दीदति तस्मा आत्माग्नये (वेट्)(स्वर्विदे) स्वः गगन मंडले ज्योती रूपेन सीदति तस्मा आत्माग्नये (वेट्) स्वाहा॥१२

पाच्यां सिक्तान्दधि मधु घृतनान् कुशैः परिश्रित्सहितं सपक्ष पुच्छ मग्निं मध्ये वहिश्च प्रोक्षति तस्य प्रथमो मंत्रः का० ९

येदेवा देवानां यज्ञिया यज्ञियाना थं संवत्सरीण मुपभाग मासते।
अहुतादो हविषो यज्ञेऽअस्मिन्त्स्वयम्पिवन्तु मधुनो घृतस्य॥ १३॥
येदेवादेवेष्वाधिदेवत्व मायन्ये ब्रह्मणः पुरएतारोऽअस्य। येभ्योनऽऋते

।२।१।१५ ओं येदेवा इत्यस्य लोपामुद्राऋषिर्निन्द्रदार्षीजगती छन्दः प्राणो देवता १ **मंत्रार्थः** - (ये)(देवाः) प्राणाः (अहुतादः) देवाहुत मदन्ति प्राणास्त्वहुतादः (अस्मिन्)(यज्ञे) चयन लक्षणे योग यज्ञेवा (मधुनः)(घृतस्य) घृतस्यन्द्रिय शक्ति समूहस्यवा (हविषः) हविषा आत्म प्रति विंवस्य वा (स्वयं)(पिवन्तु)(यज्ञियानां थं) यज्ञाहीणां (देवानाम्) मध्ये (यज्ञियाः) यज्ञ योग्यास्ते (संवत्सरीणं) संवत्सर सम्बंधिनं योगि सम्बन्धिनं वा। पुरुषो वै संवत्सरः श० १२।३।२।१ (भागम्)(उपासते)॥ १३॥ द्वितीयो मंत्रः ओं ये देवा इत्यस्य लोपा मुद्राऋषि रार्षी जगती छन्दः

प्राणोदेवता १ **मंत्रार्थः**– (ये) (देवाः) प्राणाः (देवेषु) इन्द्रादिषु। इन्द्रियेषुवा (अधि) अधिष्ठातृत्वेन (देवत्वम्) (आयन्) प्राप्ताः (ये) (अस्य) (ब्रह्मणः) आत्माग्नेः (पुरः) (एतारः) पुरः सराः (येभ्यः) (ऋते) प्राणान्विना (किञ्चन) (धाम) किमपि शरीरं (न) (पवते) चेष्टते। पवङ् गतौ (ते) प्राणाः (न) (दिवः) दिवि (न) (पृथिव्याम्) किन्तु (स्नुषु) चक्षुरादीन्द्रियालयेषु (अधि) अधिश्रित्यवर्तन्ते तेषूपलभ्यन्ते ॥ १४॥ प्रोक्षणानन्तरमग्नेरवतरति तस्य मंत्रः का० १८। ३। ८ ओंप्राणदा इत्यस्य लोपमुद्राऋषिर्विराडार्षीपंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता १ **मंत्रार्थः** हे अग्ने वा हे आत्माग्ने (प्राणदाः) प्राणस्य दाता (अपानदाः) अपानस्य दाता (व्यानदाः) व्यानस्य दाता (वर्चोदाः) बलस्य योग वलस्य वा दाता (वरिवोदाः) धन-

पवते धाम किंचन नते दिवो न पृथिव्या अधि स्नुषु ॥ १४॥
प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः। अन्यां स्ते अस्मत्तपन्तु
हेतयः पावको अस्मभ्यं शिवो भव १५

स्य दातात्वं (अस्माकं) (पावकः) शोधकः (शिवः) (भव) (ते) तव (हेतयः) ज्वाला अस्त्राणिवा (अस्मत्) (अन्यान्) शत्रून् कामादीन्वा (तपन्तु) ॥ १५॥ शालायामागत्य पञ्च गृहीतमाज्यं शालाद्वार्येऽग्नौ जुहोतितस्य मंत्रः का० १८ ३। १२ ओं अग्निरित्यस्य भारद्वाजऋषिर्निचृदार्षीगायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता १ **मंत्रार्थः** (अग्निः) अग्निरात्माग्निर्वा (तिग्मेन) तीक्ष्णेन (शोचिषा) तेजसा (विश्वं) सर्वं (अत्रिणं) राक्षसं कामादिसमूहंवा (नियांसत्) नितरां क्षीणं करोतु। यासउपक्षये (अग्निः) अग्निरात्माग्निर्वा (नः) अस्मभ्यं (रयिम्) धनं योग धनंवा (वनते) ददातु। वनतिर्दा

नार्थः ॥ १६॥ अन्वग्रहीत होमानन्तरं षोडश ग्रहीतमाज्यं जुह्वां कृत्वा तस्याधमनुवाकशेषेण शालाद्वार्ये एवजुहो
तितस्यप्रथमो मंत्रः का० १८।३।१३ ॐ यइमा इत्यस्य भुवनपुत्रो विश्वकर्मा ऋषिर्निचृदार्षीत्रिष्टुप्छन्दो विश्वकर्मा देवता १

मंत्रार्थः (यः) (ऋषिः) अतीन्द्रियद्रष्टा सर्वज्ञः (होता) संहाररूपस्य होमस्य कर्त्ता (नः) अस्माकं वैदिकमंत्राणां (पिता) ज
नको महानारायणः (इमा) इमानि (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि (भुवनानि) (जुह्वत्) संहरन्सन् (न्यसीदत्) एकमेवाद्वि
तीयं स्थितवान् (सः) (प्रथमच्छेत्) प्रथममेकमद्वितीयं स्वरूपं प्रविष्टः सन् छादयतेः किपि हूस्वः (आशिषा) पुनः
सिसृक्षारूपेणाभिलाषेण (द्रविणम्) जगद्रूपं धनं (इच्छमानः) इषेरात्मनेपदमार्षम् (अवरान्) मायाविकारा

अग्निस्तिग्मेनशोचिषा यासद्विश्वंन्यत्रिणम्। अग्निर्नोवनतेरयिम् ॥ १६॥
यइमा विश्वाभुवनानिजुह्वदृषिर्होतान्यसीदत्पितानः। सआशिषाद्रविण
मिच्छमानः प्रथमच्छदवराँ२॥ आविवेश ॥ १७॥ किथंस्विदासीदधिष्ठा
नमारम्भणङ्कतमत्स्वित्कथासीत्। यतोभूमिञ्जनयन्विश्वकर्मा विद्यामो

न् व्यष्टिसमष्टिदेहान् (आविवेश) जीवरूपेण प्रविष्टः ॥ १७॥ द्वितीयो मंत्रः ॐ किथंस्विदित्यस्य विश्वकर्मा
ऋषिर्भुरिगार्षीपंक्तिश्छंदो विश्वकर्मा देवता १ **मंत्रार्थः** (स्वित्) वितर्के ब्रह्मांडं सृजतो महानारायण
स्य (अधिष्ठानम्) निवासस्थानं (किंथं) (आसीत्) किमपिन (स्वित्) वितर्के (आरम्भणम्) आरभ्यतेऽनेनेत्युपा
दानकारणं घटानां मृदिवतथा (कथा) क्रियाद्योतकं वैदिकवाक्यं (कतमत्) किं (आसीत्) किमपिन (यतः)

॥ य० ॥ माध्यं० प्रा० ॥ वाज० सं० ॥

॥ शु० १७ ॥ अ० १७ ॥ ७८८ ॥

(विश्वचक्षाः) सर्वद्रष्टा अतीतानागत वर्त्तमान कालानां युगपद् द्रष्टा (विश्वकर्मा) महानारायणः (भूमिम्) ब्रह्मांडं (जनयन्) सन् (महिना)। महिम्ना विद्याख्य पराशक्त्या (अविद्याम्) अव्यक्ताख्यां वीज रूपां मायां (अर्णोति) व्याप्तवान् ऊर्णु आच्छादने लङ्॥१८॥ द्वितीयो मंत्रः ओं विश्वत इत्यस्य भुवनपुत्रो विश्व कर्माऋषिर्भुरिगार्षी त्रिष्टुप् छन्दो विश्व कर्मा देवता १ **मंत्रार्थः**– (विश्वतश्चक्षुः) सर्वतश्चक्षूंषि यस्य सः (उत) च (विश्वतो मुखः) सर्वतो मुखानि यस्य सः (विश्वतो वाहुः) सर्वतो भुजा यस्य सः (उत) च (विश्वतस्पात्) सर्वतः पादा यस्य सः (एकः) अद्वितीयः (देवः) असंख्य ब्रह्मांडैः क्रीडन शीलो महानारायणः (द्यावाभूमी) (जनयन्) सन् (वाहुभ्याम्) अग्नि सूर्य रूपा-

र्णोन्महिना विश्वचक्षाः॥१८॥ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो वाहुरुत विश्वत स्पात्। सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः १९

भ्यां जीवेश रूपाभ्यां वा (सन्धमति) ब्रह्माण्डं सम्यक् ज्वाला युक्तं करोति तथा (पतत्रैः) पतन शीलैः अनित्यैरात्मप्रतिविंबैः (सम्) सन्धमति व्यष्टि देहान्प्रकाशयति॥१९॥ तृतीयो मंत्रः ओं किमित्यस्य भुवन पुत्रो विश्व कर्मा ऋषिः स्वराडार्षी त्रिष्टुप् छन्दो विश्व कर्मा देवता १ **मंत्रार्थः**– (स्वित्) वितर्के (वनम्) (किम्) (आस) (सः) (वृक्षः) (उ) अपि (कः) आस (यतः) वनाद् वृक्षाच्च महानारायणः (द्यावापृथिवी) ब्रह्माण्डं (निष्टतक्षुः) निस्तक्षनिस्तक्ष्याल्ङ् कृतवान्। वचन व्यत्ययः हे (मनीषिणः) विद्वांसः स महानारायणः (भुवनानि) स्वप्रकाश रूपाणि (धारयन्)

सन्(यत) अव्यक्ताख्यंवीजं(अध्यतिष्ठत्)(तत्) अव्यक्ताख्यंवीजं(मनसा)(उ) एव(पृच्छत) तस्मादन्यत्स्रष्टे वीजंनास्ति॥

चतुर्थो मंत्रः ओं यात इत्यस्य भुवन पुत्रो विश्व कर्माऋषिरार्षीत्रिष्टुप् छन्दो विश्व कर्मा देवता १

मंत्रार्थः हे(स्वधावः) ब्रह्मांड रूपान्नवन्(विश्व कर्मन्) महानारायण(ते) तव(या) यानि(परमाणि) गोलोकादीनि(या) यानि(अवमा) अवमानि कनी यांसि स्वर्गादीनि(उत) (या) यानि(मध्यमा) मध्यमानि ब्राह्मादिलोकानि सन्ति(इमा) इमानि(धामानि)(सखिभ्यः) भक्तेभ्यः(आशिक्ष) देहि तथा(हविषि) आत्मप्रति विंव रूप हविषि(तन्वं) आत्मानं(वृधानः) वर्धयन्सन्(स्वयं)(यजस्व)॥२१॥

किꣳस्विद्वनङ्क उस वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः। मनीषिणोमनसा पृच्छतेदुतद्यदध्यतिष्ठद्भुवनानिधारयन्॥२०॥ यातेधामानिपरमाणियावमायामध्यमाविश्वकर्म्मन्नुतेमा। शिक्षासखिभ्योहविषिस्वधावः स्वयंयजस्वतन्वंवृधानः॥२१॥ विश्वकर्म्मन्हविषावावृधानः स्वयंयजस्वपृथिवी

पञ्चमो मंत्रः ओं विश्व कर्मन्नित्यस्य भुवन पुत्रो विश्व कर्माऋषिर्निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दो विश्व कर्मा देवता १

मंत्रार्थः वागादयः कथयन्ति हे(विश्व कर्मन्) महानारायण(हविषो) प्रति विंव रूप हविषा(वावृधानः) वर्धमानः सन्(पृथिवीम्) मानस ज्योतिषं(उत) च(द्याम्) भृकुटिज्योतिसं(स्वयं)(यजस्व)(अभितः) स्थिताः(अन्ये)(सपत्नाः) कामादि शत्रवः(मुह्यन्तु) मोहंप्राप्नुवन्तु(इह) अस्मिन् यज्ञे (मघवा) आत्म रूपो यजमानः(अस्माकं)

[१६](सूरिः) आत्मज्ञानोपदेशकः [१७](अस्तु) ॥२२॥ द्वेऋचौ व्याख्याते अष्टर्चेन षोडशगृहीतस्यापरमर्द्धं जुहोति

तस्य प्रथमो मंत्रः का० १८।३।१३ ऊंचक्षुषइत्यस्य भुवनपुत्रो विश्व कर्मा ऋषिरार्षी त्रिष्टुप् छन्दो विश्व कर्मा देवता १

मंत्रार्थः [१](यदा) [२](इत्) यदेव [३](पूर्वे) प्राणाः [४](अन्ताः) अन्तः करणानि [५](अददृहन्त) दृढीकृतवन्तः। दृंहते रूपम्।
[६](आत्) [७](इत्) अनन्तरमेव [८](द्यावापृथिवी) मनोभृकुटि शक्ती [९](अप्रथेताम्) प्रथू अभूताम् [१०](चक्षुषः) व्यष्टि समष्टि सूर्य-

मुत द्याम्। मुह्यन्त्वन्येअभितः सपत्ना इहास्माकम्मघवा सूरिरस्तु ॥ २२ ॥
वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजेअद्याहुवेम। सनो विश्वानि हवनानि जोषद्विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा ॥ २३ ॥ विश्वकर्म्मन्हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत् ॥ २४ ॥ चक्षुषः पिता मनसा हि धीरो घृतमेनेअजनन्नम्नमाने। यदेदन्ता अददृहन्त पूर्वआदिद्द्यावापृथिवीअप्रथेताम् २५

स्य [११](पिता) पालको महानारायणः [१२](मनसा) [१३](धीरः) सन् [१४](हि) निश्चितं [१५](एने) एते [१६](नम्नमाने) नममाने मनोभृकुट्यौ मति
[१७](घृतम्) ज्ञानेन्द्रियाणि। प्राणाः पयः शीर्षस्त्वत्राणं श० ६।५।४।१५ [१८](अजनयत्) ॥२५॥

द्वितीयो मंत्रः ऊंविश्वकर्मेत्यस्य भुवनपुत्रो विश्वकर्म ऋषिर्भुरिगार्षी त्रिष्टुप् छन्दो विश्व कर्मा देवता १

मंत्रार्थः – [१](यत्र) (समाधौ) [२](सप्तऋषीन्) प्राणान् प्राणा वाऽ सप्तऋषयः श० १४।५।२।५ [३](परेण) महानाराय-

एोन (एकम्) एकीभूतान् (आहुः) वदन्ति यः (विश्वकर्मा) महानारायणः (विमनाः) विशिष्टंमनो यस्य स (आत्) च (विहायाः) नभोवद्व्यापकः (धाता) धारयिता (विधाता) उत्पादकः (उत) च (परमः) सर्वेभ्य उत्कृष्टः (संदृक्) सम्यग्दृष्टा अस्ति (तेषाम्) प्राणानां (इष्टानि) आप्रारब्धसमाप्तेः प्रियाणीन्द्रियगोलकानि (इषा) अमृत वृष्ट्या (सम्मदन्ति) २६

तृतीयो मंत्रः ॐ यो न इत्यस्य भुवन पुत्रो विश्वकर्मर्षिर्निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दो विश्वकर्मा देवता १ **मंत्रार्थः** (यः) महानारायणः (नः) अस्माकं (पिता) पालकः (जनिता) उत्पादकः (यः) (विधाता) विशेषेण धारकः (विश्वा) विश्वानि सर्वाणि (धामानि)

विश्वकर्मा विमना आद्विहाया धाता विधाता परमोत सन्दृक्। तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति यत्रा सप्तऋषीन्पर एकमाहुः ॥२६॥ यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यो देवानान्नामधा एक एव तꣳ सम्प्रश्नम्भुवना यन्त्यन्या ॥२७॥ त आयजन्त द्रविणꣳ समस्मा ऋषयः पूर्वे जरितारो न भूना। असूर्त्ते सूर्त्ते रजांसि निषत्ते ये भूतानि समकृण्वन्निमानि ॥२८॥

लोकानि (भुवनानि) भूतजातानि (वेद) जानाति (यः) (एकः) अद्वितीयः (एव) सन् (देवानाम्) (नामधाः) देवरूपैः प्रादुर्भवति (अन्या) (भुवना) भक्ताः (संप्रश्नं) सम्यक् प्रश्नो यस्यां सा युज्य मुक्त्यां यथा तथा (तम्) महानारायणं (यन्ति) गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति ॥ २७ ॥ चतुर्थो मंत्रः ॐ त आयजन्त इत्यस्य भुवन पुत्रो विश्वकर्म ऋषिर्भुरिगार्षी त्रिष्टुप् छंदो विश्वकर्मा देवता १ **मंत्रार्थः** -- (ते) (जरितारः) स्तोतारः (पूर्वे) (ऋषयः) प्राणाः (अस्मै) महानारायणाय

[६](द्रविणं) आत्मप्रतिविंब[७](समायजन्त)सम्यक् आभिमुख्येन यजन्त। कथं यजन्त [८](नः)[९](भूना) भूम्ना बाहुल्येन। मलोपश्छान्दसः [१०](ये)[११](असूर्त्ते) गतिरहितानिरुद्धाःप्राणाः ईरगतावित्यस्य छान्दसइडभावो निष्ठायाम् ईकारस्य पूर्वसवर्णदीर्घः जस एकारः [१२](सूर्ते) सुष्ठु ईरिते प्रेरिते विस्तीर्णे। सुपूर्वस्य ईरधातोर्निष्ठायां पूर्ववत्। नसत्तनिसत्तेत्यादिना निपातः [१३](रजसि) हार्दान्तरिक्षे[१४](निषत्ते) निषण्णाः निषण्णाः स्थिताः। जस एकारः[१५](इमानि)[१६](भूतानि) अन्तः करणानि[१७](सम्)समानि शान्तानि[१८](अकृण्वन्)॥२८॥ पञ्चमो मन्त्रः ओं परो दिवेत्यस्य भुवनपुत्रो विश्वकर्मा ऋषिः आर्षी त्रिष्टुप् छं॰

परो दिवा पर एना पृथिव्या परो देवेभिरसुरैर्यदस्ति। कं स्विद्गर्भं प्रथमं दध्र आपो यत्र देवाः समपश्यन्त पूर्वे॥ २९॥ तमिद्गर्भं प्रथमं दध्र आपो यत्र देवाः समगच्छन्त विश्वे। अजस्य नाभावध्येकमर्पितं यस्मिन्विश्वानि भुवनानि तस्थुः॥ ३०॥

विश्वकर्मा देवता१ **मन्त्रार्थः** [१](यत्) यस्मात् महानारायणः[२](दिवा) द्युलोकात्[३](परः)[४](एना)[५](पृथिव्या)[६](परः)[७](देवेभिः)[८](असुरैः) देवेभ्योऽसुरेभ्यश्च[९](परः)[१०](अस्ति) तस्मात्[११](स्वित्) प्रश्नः[१२](आपः) महानारायणं शवः। आपो ज्योती रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोमिति श्रुतेः[१३](प्रथमं)[१४](कम्)[१५](गर्भम्)[१६](दध्रे) दाधिरे धारयन् धात्रो लिटितङिः प्रथमबहुवचनस्य लिटस्तझयोरेशिरेजि तिङ्रेचि कृते तस्य डरयोरे इति रे आदेशे तस्य स्थानिवत्त्वाद् आतो लोप इति च इत्यालोपदध्रे इति रूपम्[१७](यत्र) गर्भे[१८](पूर्वे)[१९](देवाः) ब्रह्मादयः[२०](समे) महानारायणं[२१](अपश्यन्त)॥२९॥

षष्ठो मंत्रः ॐतमिदित्यस्य भुवन पुत्रो विश्व कर्मऋषिरार्षी त्रिष्टुप् छन्दो विश्व कर्मा देवता १ **मंत्रार्थः** (आपः) महानारायणां शवः (प्रथमम्) (तम्) (इत्) तमेव (गर्भम्) ब्रह्माण्डं (दध्रे) दाधिरे (यत्र) गर्भे (विश्वे) सर्वे (देवाः) ब्रह्मादयः (सम्) महानारायणां (अगच्छन्त) कथं गर्भोत्पत्तिः (अजस्य) महानारायणस्य (नाभौ) नाभौ मध्येवा नाभिर्वै मध्यमिति श्रुतेः (एकम्) अविभक्तं प्रधानाख्यं वीजं (अर्पितं) स्थापितं (यस्मिन्) महानारायणां भुयुक्ते वीजे (विश्वानि) सर्वाणि (भुवनानि) भूत जातानि (अधितस्थुः) अधिकं स्थितानि ॥ ३० ॥

सप्तमो मंत्रः ॐनतमित्यस्य भुवन पुत्रो विश्व कर्मऋषिर्भुरिगार्षी पंक्तिश्छंदो विश्वकर्मा देवता १ **मंत्रार्थः** - (यः)

न तं विदाथ य इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरम्बभूव। नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति ॥ ३१ ॥ विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट देव आदिद्गन्धर्वो अभवद्द्वितीयः। तृतीयः पिता जनितौषधीनामपां गर्भं व्यदधात्पुरुत्रा ॥ ३२ ॥

महानारायणाः (इमा) इमानि भूत जातानि (जजान) उत्पादितवान् तथा (युष्माकम्) अहम्प्रत्यय गम्यानामात्मप्रति विंवानां (अन्तरम्) अभ्यन्तरं (अन्यत्) अहम्प्रत्यादादतिरिक्तं वेद्यमीश्वर तत्वं (वभूव) (तम्) महानारायणां यूयं (न) (विदाथ) नजानीथ। लेटो डाटाविति आडागमः यस्मात् भवन्तः (नीहारेण) नीहार सदृशेनाज्ञानेन (च) तथा (जल्प्या) देवोऽहं नरोऽहं ममेदं गृह क्षेत्रमित्याद्यनृतजल्पनेन (प्रावृताः) (असुतृपः) प्राणानां तृप्तिकारकाः ॥

(उकथशासः) परलोकभोगान् सम्पादयितुं यज्ञेषु शस्त्रस्तोतारः (चरन्ति) प्रवर्त्तन्ते ॥३१॥

अथाधिदैवम् अष्टमो मंत्रः ओं विश्वकर्मेत्यस्य भुवनपुत्रो विश्वकर्मऋषिर्ब्राह्म्युष्णिक् छन्दो विश्वकर्मा देवता ।

मंत्रार्थः – (हि) प्रथमं (देवः) असंख्यब्रह्माण्डैः क्रीडनशीलः (विश्वकर्मा) महानारायणः (अजनिष्ट) प्रादुर्भूतः (आत्) (इत्) अनन्तरमेव (द्वितीयः) (गन्धर्वः) ब्रह्माण्डभूमेर्धारको विराडात्मा सूर्यः (अभवत्) (तृतीयः) (ओषधीनाम्) (जनिता) (पिता) पालकोचन्द्रमाऽभवत् तथा (अपाम्) अन्तरिक्षाणां (गर्भम्) (पुरुत्रा) (प) भूः (उ) भुवः (र) महः (उ) स्वः (त) जनः (र) तपः (अ) सत्यमिति लोकसमूहेन (व्यदधात्) ॥ ३२॥

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् । संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतꣳ सेना अजयत्साकमिन्द्रः ३३

अथाध्यात्मम् – (हि) प्रथमम् (देवः) (विश्वकर्मा) ईशो अन्तर्यामी (अजनिष्ट) (आत्) (इत्) अनन्तरमेव (द्वितीयः) (गन्धर्वः) देहस्य धारको मानस सूर्यः (अभवत्) (तृतीयः) (ओषधीनाम्) इन्द्रियाणां (जनिता) (पिता) मनोऽभवत् तथा (अपाम्) अन्तरिक्षाणां (गर्भम्) (पुरुत्रा) (प) मूलं (उ) नाभेरधः (र) हृदयं (उ) नाभिः (त) कण्ठं (र) भ्रूकुटिः (अ) गगनमंडलं (व्यदधात्) ॥ ३२॥ वैश्वं कर्मणा होमः समाप्तः अग्नौ चयनं इध्ममादीप्याहवनीये चित्यां प्रतिनीयमाने ब्रह्माप्रतिरथसूक्तस्य द्वादशऋचो जपन्दक्षिणतोऽनुगच्छति तस्य प्रथमो मंत्रः का० ११।१।८।
१० ओं आशुरित्यस्याप्रतिरथऋषिरार्षीत्रिष्टुप छन्द इन्द्रो देवता १ **मंत्रार्थः** (आशुः) आसमन्तात् सुद्रुत्यव्या

त्कंशब्दं यस्य सवाराहावतारः (शिशानः) शिशिलामन्द्राचलः समुद्रमथने यस्य शानस्तीक्ष्णकारकः सकूर्मावतारः (वृषभः) वर्णानां श्रेष्ठो वामनावतारः (भीमः) असुरानां भयंकरोनृसिंहावतारः (घनाघनः) घनः (घनश्यामः कृष्णावतारः (अघनः) वलदेवावतारः (चर्षणीनाम्) दस्युप्रायमनुष्याणां (क्षोभनः) क्षोभहेतुर्निष्कलङ्कावतारः (सङ्क्रन्दनः) क्षत्रियाणां समाह्वाता परशुरामावतारः (अनिमिषः) मत्स्यावतार (नः) च (एकवीरः) अद्वैतोवीरः रामावतारः (इन्द्रः) परमेश्वरः (साकम्) देवैः सह देवांश नरादिभिः सहवा (शतथं) असंख्याताः (सेनाः) देवशत्रूणां सेनाः (अजयत्) ॥३३॥

द्वितीयो मंत्रः ओं सन्क्रन्दनेनेत्यस्याप्रतिरथऋषिर्विराड् ब्राह्म्यनुष्टुप छन्द इन्द्रो देवता १ **मंत्रार्थः**— हे (युधः) योद्धारः

संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुनायुत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना। तदिन्द्रेण
जयत तत्सहध्वं युधोनर इषुहस्तेन वृष्णा॥३४॥ स इषुहस्तैस्स निषङ्गि-
भिर्वशी स थं स्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन। स थं सृष्टजित् सोमपा वाहुशर्ध्यु-
ग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता॥३५॥

क्विप्पादादावामन्त्रितस्येति आद्युदात्तः (नरः) मनुष्याः यूयं (धृष्णुना) प्रागल्भेन भीतिरहितेन (सन्क्रन्देन) सम्यक् क्रन्दयति रोदयति पापिनो जनान् तेन रुद्रेण तथा (युत्कारेण) भक्तं स्वात्मनि युतं संयुक्तं करोति तेन (अनिमिषेण) महानारायणेन तथा (इषुहस्तेन) (जिष्णुना) जयशीलेन नरेण तथा (दुश्च्यवनेन) अजय्येन नारायणेन तथा (वृष्णा) वर्षुकेन सूर्यरूपेण (इन्द्रेण) ईश्वरेण। इद ऐश्वर्ये (तत्) शत्रुवलं कामादिवलंवा (जयत) वशीकुरुत (तत्)

७९७ (सहध्वमे) अभिभवत विनाशयत॥ ३४॥ तृतीयो मंत्रः ओं सइषुहस्तैरित्यस्या प्रतिरथ ऋषि रार्षी त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता १ **मंत्रार्थः**- (सः) (वशी) स्वतन्त्रः (स) महानारायणः (इषुहस्तैः) (निषङ्गिभिः) नानावतारैः (सथं स्त्रष्टा) युद्धाय संसर्गकर्त्ता। एवुल् तृचाविति तृच्प्रत्ययः (गणेन) असुर समूहेन (सः) सह (युधः) युद्ध कर्त्ता। इगुपधज्ञेति क प्रत्ययः (संसृष्टजित्) युद्धाय सङ्गतान् जेता (सोमपाः) सोमस्यात्म प्रति विंवस्य वा पान कर्त्ता (वाहुशर्धी) वाहुबलोपेतः (उग्रधन्वा) उत्कृष्टं धनुर्यस्य सः (प्रतिहिताभिः) धनुषा प्रेरिताभिरिषुभिः (अस्ता) क्षेप्ता भवति असु क्षेपणे तृन् आद्युदात्तत्वात्॥ ३५॥ चतुर्थो मंत्रः ओं बृहस्पत इत्यस्या प्रतिरथ ऋषि रार्षी त्रिष्टुप् छन्दो बृहस्पतिर्देवता १

बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहामित्राँ अपबाधमानः। प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम्॥ ३६॥

मंत्रार्थः- महानारायणस्य कलांशभूतान्देवान् स्तौति हे (बृहस्पते) देवानां पुरोहित (रक्षोहा) रक्षसां हन्ता त्वं। क्विप् (रथेन) (परि दीय) सर्वतो गच्छ। दीयतिर्गत्यर्थः (अमित्रान्) शत्रून् (अपबाधमानः) पीडयन् (सेनाः) परकीयाः (प्रभञ्जन्) प्रकर्षेण भग्नाः कुर्वन् (युधा) युद्धेन (प्रमृणः) हिंसकान्। मृणातिर्हिंसा कर्मा तस्य क्विपि द्वितीया बहुवचनम् (जयन्) पराभवन् (अस्माकम्) (रथानाम्) अस्मदीयस्यन्दनानां (अविता) रक्षकः (एधि) भव॥ ३६

अथाध्यात्मम्- हे (बृहस्पते) प्राण। प्राणो हि बृहस्पतिः श० १४।४।१।२२ (रक्षोहा) कामादीनां हन्ता त्वं (रथेन) योग रथेन (परिदीय) समन्ताद्गच्छ (अमित्रान्) क्रोधादीन् (अपबाधमानः) पीडयन् (सेनाः) कामादीनां

सेनाः (प्रभञ्जन्) (युधा) युद्धेन (प्रमृणाः) हिंसकान्विषयान् (जयन्) (अस्माकम्) (रथानाम्) शमादीनां (अविता) (एधि) भव ॥ ३६ ॥ पञ्चमो मंत्रः ओं वलविज्ञायइत्यस्याप्रतिरथऋषिरार्षी त्रिष्टुप् छन्द इंद्रो देवता १

मंत्रार्थः हे (इन्द्र) (वलविज्ञायः) परकीय वलस्यज्ञाता । कर्मण्यपण (स्थविरः) पुरातनः सर्वानु शासकः (प्रवीरः) प्रकृष्टो वीरः शूरः (सहस्वान्) वलवान् (वाजी) अन्न वान् (उग्रः) युद्धेषुक्रूरः (अभि वीरः) अभितो वीराः शूराः यस्यसः (अभि सत्वा) अभितः सत्वानः परिचारकाः प्राणिनो यस्य सः (सहोजाः) व्रह्मज्योतिषोजातः (गोवित्) वेदवाचांज्ञातात्वं (सहमानः) शत्रूनभिभवन् (जैत्रम्) जयशीलं (रथम्) (आतिष्ठ) आरोह ॥ ३७ ॥

वलविज्ञायस्थविरःप्रवीरस्स हस्वान्वाजी सहमानउग्रः । अभि वीरोऽअभिस त्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित् ॥ ३७ ॥

अथाध्यात्मम् – हे (इन्द्र) जीवात्म रूपयजमान इन्द्रो वै यज्ञस्य यजमानः श० १।१।२।११ (वल विज्ञायः) परकीय वलस्यज्ञाता (स्थविरः) सनातनः (प्रवीरः) (सहस्वान्) योग वलवान् (वाजी) व्रह्माण्ड रूपान्न वान् (उग्रः) कामादीनां युद्धेषुक्रूरः (अभि वीरः) अभितो वीराः शमादयो यस्यसः (अभि सत्वा) अभितो वागादयः परिचारका यस्य सः (सहोजाः) व्रह्मज्योतिषः प्रादुर्भूतः (गोवित्) महावाचां ज्ञातात्वं (सहमानः) कामादीनभि भवन् (जैत्रम्) जयशीलं (रथं) योग रथं (आतिष्ठ) आरोह ॥ ३७ ॥ षष्ठो मंत्रः ओं गोत्र भिदमित्यस्याप्रतिरथऋषिर्भुरिगार्षी त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता १ **मंत्रार्थः** – हे (सजाताः) समानजन्मानः (सखायः) देवाः (इमम्) (गोत्रभिदं)

असुरकुलभेत्तारं (गोविदम्) वेदवाचांत्रातारं (वज्र बाहुं) (अज्म जयन्तम्) सङ्ग्रामानां जेतारं (ओजसा) बलेन (प्रमृण-न्तं) शत्रून् हिंसन्तं। मृणातिर्हिंसा कर्मा (इन्द्रम्) (अनु) (वीरयध्वम्) वीरकर्म कुर्वाणमनुगम्य वीरकर्मणा प्रोत्साहत शूरवीर विक्रान्तौ अदन्त श्चुरादिः लोट् (अनु) (संरभध्वम्) संरम्भं वेगं कुर्वाण मनु वेगं कुरुत ॥ ३८॥

अथाध्यात्मम् हे (सजाताः) समानजन्मानः (सखायः) जीवात्मनो मित्रा वागादयः (इमम्) (गोत्रभिदं) काम कुलभेत्तारं (गोविदम्) महा वाचां त्रातारं (वज्र बाहुं) ज्ञान वज्र धारिणं (अज्म जयन्तम्) कामादीनां सङ्ग्रामस्य

गोत्रभिदङ्गोविदं वज्रबाहुञ्जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा। इमꣳ सजाता
अनुवीरयध्वमिन्द्रꣳ सखायोऽअनु सꣳरभध्वम् ॥ ३८॥ अभि गोत्राणि सहसा
गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः। दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्योऽस्माकꣳ
सेनाऽअवतु प्र युत्सु ॥ ३९॥

जेतारं (ओजसा) योग बलेन (प्रमृणन्तं) कामादीन् हिंसन्तं (इन्द्रम्) आत्मरूपं यजमानं (अनु) (वीरयध्वम्) (अनु) (संरभध्वम्) ॥ ३८॥ सप्तमो मंत्रः ओं अभि गोत्राणीत्यस्याप्रतिरथ ऋषिर्निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता १

मंत्रार्थः (अदयः) दयारहितः (वीरः) विक्रान्तः (शतमन्युः) असंख्य क्रोधः शतयज्ञो वा (दुश्च्यवनः) अप्रच्याव्यः (पृतनाषाट्) सङ्ग्रामं सहते अभिभवति सः (अयुध्यः) योद्धुम शक्यः (इन्द्रः) देवेश्वरः (युत्सु) युद्धेषु (गोत्राणि) असुरकुलानि मेघ वृन्दानि वा (सहसा) अकस्मात् (अभि गाहमानः) सर्वतो विलोडयन् (अस्माकꣳ) (सेनाः)

(प्रावन्तु) प्रकर्षेण रक्षन्तु। छन्दसि परेऽपीति उपसर्गस्य क्रियापदान्तरयोगः ॥३९॥ **अथाध्यात्मम्** (अदयः) मायोपाधिषु दयारहितः (वीरः) संसारजये शूरः (शतमन्युः) बहुयोगयज्ञानुष्ठाता (दुश्च्यवनः) कामादिभिरप्रच्याव्यः (पृतनाषाट्) कामसंग्रामजयी (अयुध्यः) नास्ति प्रतियोधा यस्य सः (इन्द्रः) आत्मरूपयजमानः (युत्सु) युद्धेषु (गोत्राणि) कामादिकुलानि (सहसा) अकस्मात् (अभिगाहमानः) सर्वतो विलोडयन् (अस्माकं) (सेनाः) शमदमादीन् (प्रावतु) ॥३९॥ अष्टमो मंत्रः ओं इन्द्र इत्यस्याप्रतिरथ ऋषिर्ब्राह्म्युष्णिक् छन्द इन्द्रादयो देवताः १

अथ मंत्रार्थः – (बृहस्पतिः) च (इन्द्रः) (आसाम्) (अभिभञ्जन्तीनाम्) शत्रून्मर्दयन्तीनां (जयन्तीनाम्)

इन्द्र आसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रम्॥ ४०॥ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानाम्मरुताꣳ शर्द्ध उग्रम्। महामनसाम्भुवनच्यवानाङ्घोषो देवानाञ्जयतामुदस्थात् ४१

विजयमानानां (देवसेनानाम्) (नेता) प्रणेता भवतु (यज्ञः) (सोमः) च (दक्षिणा) (पुरः) अग्रे (एतु) (मरुतः) (अग्रम्) सेनाग्रभागं (यन्तु) गच्छन्तु ॥४०॥ **अथाध्यात्मम्** – (बृहस्पतिः) प्राणः। प्राणो हि बृहस्पतिः श० १४।४।१।२२॥ (इन्द्रः) आत्मरूपयजमानश्च (आसाम्) (अभिभञ्जन्तीनाम्) कामादीन्मर्दयन्तीनां (जयन्तीनाम्) (देवसेनानाम्) शमदमादीनां (नेता) प्रणेता भवतु (यज्ञः) योगयज्ञः (सोमः) आत्मप्रतिबिंबः सोमो वै भ्राट् श० ३।२।४।९ (दक्षिणा) मनः (पुरः) अग्रे (एतु) (मरुतः) प्राणाः (अग्रम्) शमादीनामग्रभागं (यन्तु) गच्छन्तु ॥४०॥

है परन्तु यदि ग्राहकजन मेम्बरता स्वीकार करें और उस उत्तम पत्र का ग्रहण करके यथाशक्ति चन्दा दें तौ यह उनकी रुचि है और यह पत्र वास्तविक परम उपकारी है॥

सूचना

वेद भाष्य के अंकों में जो तीन नंबरों का फेर चला आता है उनके पूरे करने का पक्का विचार है और इस मास में ७ व ८ अंक ग्राहकों को प्राप्त हो जावेंगे और आशा है कि प्रति मास दो अंक तैयार पर तीन मास में सब अंक पूरे हो जावेंगे परन्तु सब काम रुपये से होते हैं इस कारण ग्राहक महाशयों से विनय किया जाता है कि इस उत्तम कार्य की पूर्ति के और ध्यान देकर मूल्य भाष्य का शीघ्र भेजें और यथाशक्ति ग्राहक उद्यत करने में यत्न करें॥

चन्दा देने वालों के नाम

श्रीमान् मुन्शी देवी सिंहजी रईस आसौड़ा ज़िला मेरठ २५७

श्रीमान् बाबू रामदयाल शर्मा ओवरसियर छिंदवाड़ा सी॰ पी॰ ..१०७

मूल्य प्राप्ति

श्रीमान् बाबू रामदयालजी ओवरसियर छिंदवाड़ा सी॰ पी॰ १५७ श्री बाबू प्रकाशलालजी शेरघाटी ज़िला गया ३।=) श्री महंत राम कृष्ण पुरी गोस्वामी नागपुर ६।=) श्री पं॰ केशवप्रसादजी तिवाड़ी डि॰ इन्स्पेक्टर स्कूल उन्नाव अवध ६।=)

पञ्चम वेद

विदित होकि इस यंत्रालय में महाभारत भाषा टीका सहित पांच पर्व आदि से उद्योग तक छपकर तैयार होगये थे फिर कई कारणों से उसका छपना बंद होगया था अब बहुधा मित्रों की प्रेरणा से यह अभीष्ट है कि पूर्वोक्त अंक को मासिक अंक द्वारा छठवें भीष्म पर्व से प्रकाशित किया जावे यह भारत ग्रन्थ वेदों का उदाहरण और संपूर्ण शास्त्र और पुराणों के भाव से परिपूर्ण है इसी हेतु से पंचम वेद कहा जाता है सम्वत् १९४३ के आरंभ से प्रकाशित करने का विचार था परन्तु ग्राहक संख्या बहुत कम है अतएव निवेदन है कि जिन महाशयों को भारत रूप अमृत का पान करना ईप्सित हो अपना पत्र शीघ्र भेजें २४ दरख्वास्त आगई हैं १०० ग्राहक होनेपर काम जारी होगा आश्चर्य है कि अंग्रेज़ी भारत के लिये कई महाराजाओं ने सहस्रों और हमारी उदार गवर्नमेन्ट ने दो हज़ार मुद्रा बंगाली महाशय को प्रदान किया हमारे द्विजन्मा लोग नागरी भारत के लिये सौ १०० ग्राहक भी नहीं कर सके

पुस्तकों के नाम जो विक्री के लिये इस यन्त्रालय में मौजूद हैं

नाम पुस्तक	मूल्य	नाम पुस्तक	मूल्य
श्रीमद्भगवद्गीता जिसमें मूल संस्कृत तफि		हितोपदेश संस्कृत	॥)
रपद तदनंतर भाषार्थ और शंकर हनुमा	६)	संस्कृत पाठोप कारक	।)
ननील कंठ रामानुज इन पांच भाष्यों का		स्तोत्र पाठ संस्कृत	।॥
भाषानुवाद है		चन्द्रालोक तथा	४)
तथा छोटी मूल संस्कृत भाषाटीका सहित	४)	व्याकरण प्रभाकर पूर्वार्द्ध	१॥)
विदुर प्रजागर संस्कृत भाषाटीका	॥)	तथा उत्तरार्द्ध	३)
भृगु कुल दीपिका तथा	१॥)	रामकृष्ण काव्य सं० टीका भाषा	३॥
मनुस्मृति सार धर्म शा० सं० टीका भाषा	४)	सरल व्याकरण सं० भाषा	१॥)
महाभारत संस्कृत टीका भाषा		रमल काम धेनु भाषा	३)
पांच पर्व आदि से उद्योग तक	३३)	लक्ष्मीसरस्वती संवाद प्रथम भाग	=)
हित कल्प द्रुम भाषा छन्द (नीति)	१॥)	तथा दूसरा भाग	।)
सालोत्र तथा	३॥	शरद ऋतु की कहानी	।=)
इतिहास मार्तंड हिन्दुस्तान का इतिहास	३॥	श्रीराम सरोवर उर्दू हिन्दी	३=)
शब्दार्थ दीपिका (भाषा कोष)	४)	श्रीरास विलास भाषा छन्द	३=)
श्री कृष्णजन्म खंड दोहा चौपाई	१॥)	तर्जुमा इखलाक नासिरी उर्दू	१॥)
पद्मावत की बारह मासी सटीक	=)	शुद्धिप्रदर्शनम् संस्कृत	=)
अक्षर दीपिका	।॥	क्षेत्र कौशल भाषा	।)
पदार्थ दीपिका भाषा	३)	श्री गीताजी आनंद गिरी टी० उ० हि	१।=)
महाभारत संस्कृत टीका उर्दू पूरा	६५)	शार्ङ्गधर वैद्यक (संस्कृत टैप)	४)
भगवद्गीता तथा	॥)	ललितानाटिका (मनोहर भा० का०)	।)
ब्राह्मण गीता तथा	॥)	भाषाऋजु पाठ प्रथम परिच्छेद	=)
हरिवंश पुराण तथा	१०)	करीमा नज़ीर पारसी उर्दू	=)
विष्णु सहस्त्र नाम तथा	३)	लघु व्याकरण प्रथम भाग सं० भा०	।=)
शिव सहस्त्र नाम तथा	३)	मुहूर्त्तचिंतामणि भाषा टी० सं० (ज्यो०)	१=)
गजेन्द्र मोक्ष तथा	३)	भक्त विलास भाषा	=)
सावित्री स्तोत्र तथा	=)	ज्ञान चिंतामणि भाषा	=)।
हरिवंश पुराण उर्दू तथा	५)	ज्ञानदीपक बारह खड़ी भाषा	=)।
मुक्ति समुद्र तथा (वेदान्त)	४)	नसीहत नामा वली भाषा	=)
ज्ञान माला तथा (छन्द)	।=)	स्त्री शिक्षा हरिमुकुंद शास्त्री कृत	॥)
व्रजचरित्र उर्दू चरणदास कृत	=)	हारावली कोष संस्कृत	३)
भागवत महात्म्य उर्दू	=)	रसिक मंजरी कविता संग्रह	।)
गुलदस्ते हिकमत (वैद्यक)	।)	महाजनी सार हिन्दी सराफ़ी	=)
भृगु कुल दीपिका उर्दू	॥)	सुलभ बीज गणित भाषा	।=)
		बोधासार	=)॥

[OrderDescription]
,CREATED=13.12.19 15:35
,TRANSFERRED=2019/12/13 at 15:51:23
,PAGES=87
,TYPE=STD
,NAME=S0002340
,Book Name=M-2250-SHRISUKAL YAJUVED BRAHAMBHASYA
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,FILE14=00000014.TIF

FILE15=00000015.TIF
,FILE16=00000016.TIF
,FILE17=00000017.TIF
,FILE18=00000018.TIF
,FILE19=00000019.TIF
,FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,FILE22=00000022.TIF
,FILE23=00000023.TIF
,FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF
,FILE26=00000026.TIF
,FILE27=00000027.TIF
,FILE28=00000028.TIF
,FILE29=00000029.TIF
,FILE30=00000030.TIF
,FILE31=00000031.TIF
,FILE32=00000032.TIF
,FILE33=00000033.TIF
,FILE34=00000034.TIF
,FILE35=00000035.TIF
,FILE36=00000036.TIF
,FILE37=00000037.TIF

FILE38=00000038.TIF
,FILE39=00000039.TIF
,FILE40=00000040.TIF
,FILE41=00000041.TIF
,FILE42=00000042.TIF
,FILE43=00000043.TIF
,FILE44=00000044.TIF
,FILE45=00000045.TIF
,FILE46=00000046.TIF
,FILE47=00000047.TIF
,FILE48=00000048.TIF
,FILE49=00000049.TIF
,FILE50=00000050.TIF
,FILE51=00000051.TIF
,FILE52=00000052.TIF
,FILE53=00000053.TIF
,FILE54=00000054.TIF
,FILE55=00000055.TIF
,FILE56=00000056.TIF
,FILE57=00000057.TIF
,FILE58=00000058.TIF
,FILE59=00000059.TIF
,FILE60=00000060.TIF

FILE61=00000061.TIF
,FILE62=00000062.TIF
,FILE63=00000063.TIF
,FILE64=00000064.TIF
,FILE65=00000065.TIF
,FILE66=00000066.TIF
,FILE67=00000067.TIF
,FILE68=00000068.TIF
,FILE69=00000069.TIF
,FILE70=00000070.TIF
,FILE71=00000071.TIF
,FILE72=00000072.TIF
,FILE73=00000073.TIF
,FILE74=00000074.TIF
,FILE75=00000075.TIF
,FILE76=00000076.TIF
,FILE77=00000077.TIF
,FILE78=00000078.TIF
,FILE79=00000079.TIF
,FILE80=00000080.TIF
,FILE81=00000081.TIF
,FILE82=00000082.TIF
,FILE83=00000083.TIF

FILE84=00000084.TIF
,FILE85=00000085.TIF
,FILE86=00000086.TIF
,FILE87=00000087.TIF
,